अप्रैल 2021

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

लक्ष्मी जी क्या कहती हैं कि,
'तुम्हें मोक्ष में जाना हो तो
हक़ की लक्ष्मी मिले वही लेना।
किसी की लक्ष्मी छीनकर
या धोखा देकर मत लेना।'

5 से 7 मार्च

अड़ालज : पूज्य दीपक भाई के आत्मज्ञान प्राप्ति के 50वें साल का महोत्सव

10 से 14 मार्च

अड़ालज : अविवाहित भाईयों की शिविर

वर्ष : 16 अंक : 6
अखंड क्रमांक : 186
अप्रैल 2021
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2021
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

दादाश्री के लक्ष्मी संबंधी 'मौलिक सूत्र'

संपादकीय

ज्ञानी पुरुष दादा भगवान (दादाश्री) द्वारा उद्‌बोधित इस स्याद्‌वाद वाणी में आत्मधर्म के शिखर के सभी स्पष्टीकरण मिलते हैं, इतना ही नहीं परंतु व्यवहार धर्म के भी उतनी ही उच्चतम स्पष्टीकरण मिलते हैं। जिससे कि निश्चय और व्यवहार, दोनों पंखों को समानांतर करके मोक्षमार्ग में प्रगति की जा सके। इस काल में व्यवहार में यदि सब से विशेष प्रधानता किसी को मिली हो तो वह है लक्ष्मी! लोकसंज्ञा में लक्ष्मी का ही प्राधान्य है। पैसे को ग्यारहवाँ प्राण कहा गया है। व्यवहार जीवन में आजीविका के लिए लक्ष्मी होना अनिवार्य है, लेकिन जब तक लक्ष्मी संबंधित व्यवहार आदर्श नहीं हो जाता तब तक व्यवहार शुद्धि नहीं माना जाएगा। क्योंकि जिसका व्यवहार बिगड़ा उसका निश्चय बिगड़े बगैर रहता ही नहीं।

परम पूज्य दादाश्री की बोध कला परोसती हुई, इस ज्ञानवाणी में लक्ष्मी से संबंधित विविध प्रकार के स्पष्टीकरण मिलेंगे। जैसे कि लक्ष्मी मेहनत से मिलती है या अक्ल से? पाप-पुण्य कैसे बंधते हैं? लक्ष्मी की कृपा कब होती हैं? लक्ष्मी की ज़रूरत कितनी हैं? नफा-नुकसान किसे हैं? लक्ष्मी की एक्सपायरी कब? वास्तव में भोगवटा (भुगतना) रुपये से है या वेदनीय (कर्म) से? लक्ष्मी का कुदरती नियम क्या है? क्या ग्यारह साल के बाद पैसे बदल जाते हैं? लक्ष्मी कितनी होनी चाहिए? तंगी भी नहीं और संग्रह भी नहीं! नुकसान के समय कौन सी कमाई करनी चाहिए?

जब आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो तब चिंता किए बगैर धीरज रखने की ज़रूरत है। व्यापार में जब प्रतिकूलता आए तब आत्मा में अनुकूलता कर लेनी चाहिए। अनुकूलता फूड (भोजन) है और प्रतिकूलता विटामिन है। लक्ष्मी का आधार लेकर चैन से नहीं बैठना चाहिए! वह आधार कब हट जाए, कहा नहीं जा सकता। पैसों से मिला हुआ सुख टेम्परेरी है, अत: वहाँ चैन से बैठने जैसा नहीं है। लक्ष्मी तो जीवन का बाइ प्रोडक्शन है! मेन प्रोडक्शन तो मोक्ष प्राप्त करना है।

प्रस्तुत अंक में, लक्ष्मी में सुख है इस मान्यता का छेदन करने के लिए, एक नए अभिगम द्वारा दादाश्री की वाणी संकलित हुई है। जिसमें दादाश्री के विशाल व्यवहार ज्ञान के समुद्र में से, लक्ष्मी से संबंधित अनुभव के निचोड़ वाले कुछ आप्तसूत्र रूपी मोती यहाँ पर लिए गए हैं। आप्त अर्थात् क्या? जो संसार में और ठेठ मोक्ष में जाने तक सभी प्रकार से विश्वास करने योग्य हैं! ज्ञानी का हर एक वाक्य शास्त्र है और वह सूत्र अर्थात् 'संक्षिप्त में बहुत कुछ', उसमें सीधा सोना ही समाया हुआ है, ऐसा समझना है। सभी महात्मा इन पैसों के व्यवहार से संबंधित आप्तसूत्रों का मंथन करके, सुख की बिलीफ का छेदन करके, जीवन के चढ़ाव-उतार के प्रसंगों में भय, परेशानियों के सामने ज्ञान की चाबी का उपयोग करके, व्यावहारिक उलझनों का समझपूर्वक हल लाकर, खुद के सनातन सुख का अनुभव करें, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

दादाश्री के लक्ष्मी से संबंधित 'मौलिक सूत्र'

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

सूत्र-1

पुण्य और पाप क्या है? इस दुनिया को चलाने वाला कोई नहीं है, फिर भी, पुण्य और पाप रूपी संयोग दुनिया को चलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : पाप और पुण्य, वे भला क्या हैं?

दादाश्री : ऐसा है, इस दुनिया को चलाने वाला कोई नहीं है। यदि कोई चलाने वाला होता तो पाप-पुण्य की कोई ज़रूरत नहीं थी। पाप और पुण्य का अर्थ क्या है? क्या करेंगे तो पुण्य मिलेगा? इस जगत् के लोग, हर एक जीव, वे भगवान स्वरूप ही हैं। ये पेड़ हैं, उनमें भी जीव हैं। अब लोग ऐसा भी कहते ज़रूर हैं लेकिन वास्तव में वैसा उनकी श्रद्धा में नहीं है। इसलिए पेड़ को काटते हैं, तोड़ते हैं, सभी कुछ करते हैं। उन्हें यों ही तोड़ते रहते हैं, यानी कि बहुत नुकसान करते हैं। जीवमात्र को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुँचाने से पाप बंधते हैं और किसी भी जीव को किसी भी प्रकार से सुख देने पर पुण्य बंधते हैं। आप बग़ीचे में पानी छिड़कते हो तो जीवों को सुख होता है या दु:ख? वह जो सुख देते हो उससे पुण्य बंधता है। किसी भी जीव को थोड़ा भी त्रास दो, उससे पाप बंधता है। बस, इतना ही समझना है।

अत: यदि किसी भी जीव को किंचित्मात्र सुख या दु:ख पहुँचाया तो उससे हम पर पुण्य या पाप का असर होता है और फिर वह असर हमें भोगना पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : यदि मनुष्य पुण्य के रास्ते पर जाए तो फिर पाप क्यों आता है?

दादाश्री : वह तो हमेशा से नियम ऐसा ही है न, कि अगर आप कोई भी कार्य करते हो, तो अगर वह पुण्य का कार्य हो तो आपके सौ रुपये जमा होते हैं और पाप का कार्य हो तो भले ही थोड़ा सा, एक ही रुपये का हो, फिर भी वह आपके खाते में उधार हो जाता है लेकिन उस सौ में से एक भी कम नहीं होता। ऐसे यदि कम हो जाता तो कोई पाप लगता ही नहीं। अत: दोनों अलग-अलग रहते हैं और दोनों के फल भी अलग-अलग आते हैं। जब पाप का फल आए तब कड़वा लगता है।

सूत्र-2

लक्ष्मी पुण्य और पाप के अधीन है।

ये बुरे या अच्छे संयोग कौन भेजता होगा? हमारे ही पुण्य और पाप के आधार पर संयोग इकट्ठे होते हैं।

बात तो समझनी पड़ेगी न? इस तरह कब तक गड़बड़ घोटाला चलेगा? और *उपाधि* (बाहर से आने वाला दु:ख) तो पसंद नहीं है। यह मनुष्य देह *उपाधि* से मुक्त होने के लिए है, सिर्फ पैसे कमाने के लिए नहीं है। पैसे कैसे

कमाए जाते होंगे? मेहनत से कमाए जाते होंगे या बुद्धि से?

प्रश्नकर्ता : दोनों से ही।

दादाश्री : यदि पैसे मेहनत से कमाए जाते तो इन मज़दूरों के पास बहुत पैसे होते, क्योंकि मज़दूर ही ज़्यादा मेहनत करते हैं न! यदि पैसे बुद्धि से कमाए जाते तो ये सब पंडित लोग हैं ही न! लेकिन उनकी तो चप्पलें आधी घिसी हुई होती हैं। पैसे कमाना बुद्धि का खेल नहीं है और न ही मेहनत का फल है। वह तो आपने पूर्व जन्म में जो पुण्य किए थे, उसके फलस्वरूप आपको मिलते हैं और नुकसान वह जो पाप किए थे उसके फलस्वरूप है। लक्ष्मी पुण्य और पाप के अधीन है। इसलिए यदि लक्ष्मी चाहिए तो हमें पुण्य और पाप का ध्यान रखना चाहिए।

ये सेठ पूरी ज़िंदगी के लिए पच्चीस लाख लेकर आए हों तो वे पच्चीस लाख के बाईस लाख कर देते हैं, लेकिन बढ़ाते नहीं हैं। कब बढ़ते हैं? जब हमेशा ही धर्म में रहें तब। लेकिन खुद ही इसमें दखल करने गए कि बिगड़ा। कुदरत में हाथ डालने गया कि बिगड़ा। जब लक्ष्मी आती है तब उसे लगता है कि रेत से लक्ष्मी आ रही है। इसलिए वह रेत को पेलता रहता है लेकिन कुछ भी नहीं मिलता है। लक्ष्मी तो पुण्य का फल है, सिर्फ पुण्य का ही फल है। यदि मेहनत का फल होता न, तब तो सारी मज़दूरों के हाथ में ही गई होती और अक्ल का फल होता न, तो इन लोहे के व्यापारियों जैसी अक्ल वाला कोई नहीं है, पूरी लक्ष्मी वहाँ पर गई होती लेकिन ऐसा नहीं है। लक्ष्मी तो पुण्य का फल है।

लक्ष्मी तो पुण्य से आती है। बुद्धि का उपयोग करने से नहीं आती। मिल मालिकों और सेठों में नाम मात्र की भी बुद्धि नहीं होती फिर भी ढेर सारी लक्ष्मी आती रहती है और उनका मुनीम ही बुद्धि का उपयोग करता रहता है, इन्कम टैक्स के ऑफिस में जाए तब साहब की गालियाँ भी वही खाता है, जबकि सेठ तो आराम से सोते रहते हैं।

लक्ष्मी जी तो पुण्यशालियों के पीछे घूमती रहती हैं और मेहनती लोग लक्ष्मी जी के पीछे घूमते हैं। यानी हमें समझ लेना चाहिए कि पुण्य होगा तो लक्ष्मी जी पीछे आएँगी। वर्ना मेहनत से रोटी मिलेगी, खाने-पीने को मिलेगा और एकाद बेटी होगी तो उसकी शादी हो जाएगी। बाकी, पुण्य के बिना तो लक्ष्मी नहीं मिलती।

यानी वास्तव में क्या कहना चाहते हैं कि तुम यदि पुण्यशाली हो तो क्यों छटपटा रहे हो? और यदि तुम पुण्यशाली नहीं हो तो भी क्यों छटपटा रहे हो?

यदि तुम पुण्यशाली नहीं हो और फिर अगर पूरी रात चेहरे पर नकाब बाँधकर घूमोगे, तब भी क्या सुबह तक पचास (रुपये) मिल जाएँगे? अत: छटपटाना बंद कर और जो भी मिले उसे खा-पीकर सो जा न चुपचाप।

प्रश्नकर्ता : सब लोग लक्ष्मी के पीछे बहुत भागते हैं। इससे उनका 'चार्ज' ज़्यादा होता है न, तो उन्हें अगले जन्म में लक्ष्मी ज़्यादा मिलनी चाहिए न?

दादाश्री : 'हमें लक्ष्मी धर्म के काम में खर्च करनी है', ऐसा चार्ज किया हो, तो ज़्यादा मिलेगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसे मन में भाव किया करे कि, 'मुझे लक्ष्मी मिले', ऐसे भाव किए, वैसा 'चार्ज' किया, तो उसे अगले जन्म में कुदरत लक्ष्मी नहीं देगी?

दादाश्री : नहीं-नहीं! उससे लक्ष्मी नहीं मिलेगी। ये लक्ष्मी प्राप्त करने के जो भाव करते हैं न, उससे तो लक्ष्मी मिलनी होगी तो भी नहीं मिलेगी। बल्कि अंतराय पड़ेंगे। लक्ष्मी याद करने से नहीं मिलती, वह तो पुण्य करने से मिलती है।

'चार्ज' यानी पुण्य का चार्ज करे, तो लक्ष्मी मिलेगी। उसमें भी सिर्फ लक्ष्मी नहीं मिलती। पुण्य के 'चार्ज' से जो भी इच्छा हो कि मुझे लक्ष्मी की बहुत ज़रूरत है, तो उसे लक्ष्मी मिलती। कोई कहे, 'मुझे तो सिर्फ धर्म ही चाहिए, तो सिर्फ धर्म मिल जाएगा और पैसे न भी हों। यानी वह पुण्य का फिर हमने टेन्डर भरा होता है कि, 'मुझे ऐसा चाहिए।' वह प्राप्त होने में पुण्य खर्च होता है।

कोई कहेगा कि, 'मुझे बंगला चाहिए, मोटर चाहिए, यह चाहिए, वह चाहिए', तो उसमें पुण्य खर्च हो जाता है तो फिर धर्म के लिए कुछ नहीं रहता और कोई कहे कि मुझे धर्म ही चाहिए, मोटर नहीं चाहिए। मुझे तो इतने से दो रूम होंगे तब भी चलेगा लेकिन धर्म ही अधिक चाहिए, तो उसे धर्म अधिक मिलेगा और अन्य चीज़ें कम होंगी यानी वह अपने हिसाब से पुण्य का टेन्डर भरता है।

सूत्र-3

प्रत्येक व्यक्ति को जो भी चीजें मिलती हैं, वे उसके बुद्धि के आशय के अनुसार ही है। बुद्धि के आशय में ऐसा हो कि मुझे झोंपड़ी में ही ठीक लगेगा तो करोड़ों रुपये होने पर भी, उसे झोंपड़ी के बिना अच्छा नहीं लगता क्योंकि उसने वैसी प्रतिष्ठा की है।

हर एक व्यक्ति को अपने घर में आनंद आता है। झोंपड़ी वाले को बंगले में आनंद नहीं आता और बंगले वाले को झोंपड़ी में आनंद नहीं आता। इसका कारण उनकी बुद्धि का आशय है। बुद्धि के आशय में जो जैसा लेकर आया है उसे वैसा ही मिलता है। बुद्धि के आशय में जो भरा हुआ हो उसके दो हिस्से होते हैं: (1) पापफल और (2) पुण्यफल। बुद्धि के आशय का सभी ने विभाजन किया तो सौ प्रतिशत में से अधिकतर ने मोटर, बंगला, बेटे-बेटियाँ और पत्नी इन सब के लिए भरा तो वह सब प्राप्त करने में सारा पुण्य खर्च हो गया और धर्म के लिए मुश्किल से एक या दो प्रतिशत ही बुद्धि के आशय में भरे हैं।

दो चोर चोरी करते हैं, उनमें से एक पकड़ा जाता है और दूसरा आराम से छूट जाता है। यह क्या दर्शाता है? चोरी करनी है, ऐसा दोनों चोर अपनी-अपनी बुद्धि के आशय में लेकर आए थे। लेकिन उनमें से जो पकड़ा गया यह उसका पापफल उदय में आया और खर्च हुआ। जबकि दूसरा छूट गया, उसका पुण्य उसमें खर्च हो गया। उसी तरह हर एक के बुद्धि के आशय में जो होता है, उसमें पाप और पुण्य काम करते हैं। बुद्धि के आशय में लक्ष्मी प्राप्त करनी है, ऐसा भरकर लाया हो तो उसका पुण्य खर्च हुआ और ढेर सारी लक्ष्मी मिलती है। दूसरा, बुद्धि के आशय में इतना तो भरकर लाया है कि लक्ष्मी प्राप्त करनी है लेकिन उसमें पुण्य खर्च होने के बजाय पापफल सामने आया तो लक्ष्मी जी मुँह ही नहीं दिखाती। अरे! यह तो इतना साफ-सुथरा हिसाब है कि किसी का कुछ भी चले ऐसा नहीं है। जबकि ये अकर्मी लोग ऐसा मान लेते हैं कि मैंने दस लाख रुपये कमाए। अरे! यह तो पुण्य खर्च हुआ और वह भी उल्टे रास्ते पर। इसके बजाय तो अपनी बुद्धि का आशय बदलो। धर्म के लिए ही बुद्धि का आशय करने जैसा है।

ये जड़ वस्तुएँ, मोटर, बंगला, रेडियो, इन सब की भजना करके उन्हीं के लिए बुद्धि का आशय रखने जैसा नहीं है। धर्म के लिए ही- आत्मधर्म के लिए ही बुद्धि का आशय रखो। अभी आपको जो प्राप्त हुआ है वह भले ही हो, लेकिन अब तो आशय बदलकर संपूर्ण सौ प्रतिशत, सिर्फ धर्म के लिए ही रखो।

हम अपनी बुद्धि के आशय में सौ प्रतिशत धर्म और जगत् कल्याण की भावना लाए हैं। हमारा पुण्य और कहीं भी खर्च ही नहीं हुआ। पैसे, मोटर, बंगला, बेटा, बेटी कहीं भी नहीं।

हम से जो भी मिले और ज्ञान ले गए, उन्होंने दो-पाँच प्रतिशत धर्म के लिए, मुक्ति के लिए रखे थे इसलिए हम मिले। हमने पूरे सौ प्रतिशत धर्म में डाले, इसलिए सभी जगह से हमें धर्म के लिए 'नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट' मिला है।

प्रश्नकर्ता : हमारे पास पुण्य की लक्ष्मी आने वाली है या नहीं, उसके लिए कुछ सहज पुरुषार्थ तो होना चाहिए न?

दादाश्री : पुण्य की लक्ष्मी के लिए कैसा पुरुषार्थ होता है? यों सरल और सीधा पुरुषार्थ होता है। यह तो, जो सरल और सीधा है, नासमझी से उसे हम कठिन बना देते हैं।

प्रश्नकर्ता : जब हमें ऐसा लगे कि यह सरल और सीधा नहीं बल्कि कठिन है तब फिर क्या उसे छोड़ देना चाहिए? हमें जब ऐसा लगे कि हमारा पुण्य इतना नहीं है कि लक्ष्मी सरल रास्ते से आए, तब फिर क्या वहाँ हमें सहज हो जाना चाहिए?

दादाश्री : नहीं-नहीं। धीरज रखोगे तो अपने आप ही सब सरल हो जाता है! लेकिन यह तो धीरज नहीं रहता है और दौड़-भाग करते रहते हैं और सब बिगाड़ देते हैं।

प्रश्नकर्ता : धीरज नहीं रहता है और, 'ऐसा कर लूँ, वैसा कर लूँ', ऐसा हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, 'ऐसा कर लूँ, वैसा कर लूँ', उससे सब उलझ जाता है। जब ट्रेन पकड़नी हो तब भी उसे धीरज नहीं रहता। क्या उस समय आराम से चाय पीता है? नहीं, वह तो गाड़ी अभी आ जाएगी, गाड़ी अभी आ जाएगी, उसी में रहता है। उसे कहें कि, 'भाई, ज़रा यहाँ आओ, बातचीत करनी है' फिर भी वह नहीं सुनता, उसी तरह धीरज रखे बिना, 'ऐसे कर लूँ, वैसे कर लूँ' करता है। फिर इस तरह क्लेश और थकान का अनुभव करता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा है, व्यवसाय में अपने सिर पर स्वाभाविक तौर पर कुछ तलवारें लटकती रहती हैं कि इन्कम टैक्स देना है, सेल्स टैक्स देना है, पेमेंट बढ़ाना है, इस दबाव के कारण बेकार ही कोशिश करता रहता है कि ऐसा कर लूँ, वैसा कर लूँ!

दादाश्री : फिर भी कुछ नहीं हो पाता, बेकार कोशिश करने वाले को तो वैसे ही भटकते रहना है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् आपने बताया वैसे धीरज रखें तो क्या अपने आप व्यवस्था हो जाएगी?

दादाश्री : धीरज से ही सबकुछ होता है। शांति रखने पर सब मिलता है। वह घर बैठे हमें बुलाने आएँगे और ऐसा भी नहीं कि बाज़ार में ढूँढना पड़ेगा। बाकी तो, मेहनत करके मर जाए, बुद्धि लगाकर मर जाए, फिर भी आज चार आने नहीं मिलते और ऐसे वह अकेला कहाँ पीछे पड़ा है? पूरी दुनिया ही लक्ष्मी के पीछे पड़ी है।

सूत्र-4

लक्ष्मी कब नहीं मिलती? जब लोगों की बदगोई या निंदा में पड़ें तब। जब मन की स्वच्छता, देह की स्वच्छता और वाणी की स्वच्छता हो तब लक्ष्मी मिलती है!

जहाँ तिरस्कार और निंदा हैं, वहाँ लक्ष्मी नहीं रहती।

लक्ष्मी कब नहीं मिलती? 'जब लोगों की बदगोई या निंदा में पड़ें तब।' तो लक्ष्मी मिलनी बंद हो जाती है। 'मन की स्वच्छता, देह की स्वच्छता और जब वाणी की स्वच्छता हो तब लक्ष्मी मिलती है।'

यह वाणी तो सरस्वती देवी है। यदि दुरुपयोग करें न, तो लक्ष्मी जी रूठ जाती हैं। इसलिए निंदा नहीं करनी चाहिए। यहाँ तो कोई निंदा नहीं करता न, इस गाँव में? तो अच्छा है।

हमारा यह देश कब अमीर बनेगा? कब लक्ष्मीवान और सुखी होगा? जब निंदा और तिरस्कार, दोनों बंद हो जाएँगे तब। ये दोनों बंद हुए कि देश में निरे पैसे और अपार लक्ष्मी हो जाएगी!

प्रश्नकर्ता : निंदा और तिरस्कार कब बंद होते हैं?

दादाश्री : जब लोभ बढ़ता है तब निंदा और तिरस्कार, दोनों बंद हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : यदि लोभ बढ़े तो कपट भी बढ़ता है न?

दादाश्री : हाँ। लेकिन लोगों का तिरस्कार और निंदा करना तो बंद हो जाता है न! लोभी व्यक्ति को फुरसत ही नहीं मिलती न! लोभी तो अपनी ही तान में होता है। इसलिए उसे फिर लक्ष्मी के अंतराय नहीं पड़ते। लक्ष्मी के अंतराय किसे पड़ते हैं? जिन्हें ऐसा सब होता है कि, 'हिम्मतलाल ऐसे हैं, फलाना भाई वैसे हैं', जहाँ ऐसी निंदा है, वहाँ लक्ष्मी नहीं होती।

अत: यह बात बहुत समझने जैसी है। लोग किस कारण से दु:खी थे, वह मैंने ढूँढ निकाला, और अभी गाँव वाले किस कारण से दु:खी हैं? अभी भी निंदा के ही काम में पड़े हुए हैं। आजकल के ये लोग तो, और कुछ न हो तो रेडियो और टी.वी. की मस्ती में ही रहते हैं! ये लोग किसी की निंदा करने में नहीं पड़ते। वे तो टी.वी. इत्यादि देखते हैं और वह भी आँखें बिगाड़कर। क्या लोगों की आँखें कम बिगड़ती हैं? खुद की ही ज़िम्मेदारी है न! हमारा पूरा देश भयंकर निंदा से खत्म हो गया था। शास्त्रकारों ने नियम बताया था कि टीका-टिप्पणी अवश्य करना। यदि टीका-टिप्पणी नहीं करोगे तो लोग नहीं सुधरेंगे। इस टीका-टिप्पणी का 'एक्ज़ेगरेशन' (अतिशयोक्ति) हो गया और उससे 'निंदा' आ गई! जो विटामिन था उसी का नाश कर दिया!

सूत्र-5

इस 'रेस-कोर्स' में किसी का भी नंबर नहीं आया। सिर्फ हाँफ-हाँफकर मर जाते हैं। 'हम' ऐसी दौड़ में कभी नहीं उतरते। 'हम' तो एक ही शब्द कहते हैं कि, 'भाई, हम में बरकत नहीं हैं।'

मुंबई शहर में रात-दिन, पैसों के बारे में कौन नहीं सोचता होगा? सफेद और भगवे कपड़े वाले कुछ ही साधु ऐसे हैं कि जो पैसे नहीं लेते, पैसों को छूते भी नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : जिनके पास हैं, वे ज़्यादा पाने के लिए और जिनके पास नहीं हैं, वे पाने के लिए क्यों बेचैन रहते हैं?

दादाश्री : लोगों को रेस-कोर्स में उतरना है। रेस-कोर्स में जो घोड़े दौड़ते हैं, उनमें से कौन से घोड़े को इनाम मिलता है?

प्रश्नकर्ता : पहले घोड़े को।

दादाश्री : आपके गाँव में कौन सा घोड़ा पहले नंबर पर है? जो रेस-कोर्स में पहला आया हो उसमें किसका नाम है? यानी सभी घोड़े दौड़ते रहते हैं और हाँफ-हाँफकर मर जाते हैं लेकिन पहला नंबर किसी का भी नहीं लगता है। इस दुनिया में किसी का भी पहला नंबर नहीं आया है। बेकार ही दौड़ में पड़े हैं! फिर हाँफ-हाँफकर मर जाते हैं और इनाम तो किसी एक को ही मिलना है। यानी इस दौड़ में पड़ने जैसा नहीं है। हमें अपने आप, शांतिपूर्वक काम करते रहना चाहिए। अपने सभी फर्ज़ निभाने हैं लेकिन इस रेस-कोर्स में पड़ने जैसा नहीं है। क्या आपको इस रेस-कोर्स में उतरना है?

प्रश्नकर्ता : इस जीवन में आए हैं तो रेस-कोर्स में उतरना ही पड़ेगा न?

दादाश्री : तो दौड़ो, कौन मना करता है? जितना दौड़ सकते हो उतना दौड़ो। लेकिन हम आपसे कह देते हैं, कि फर्ज़ अच्छी तरह और शांतिपूर्वक निभाना। आपको रात को ग्यारह बजे सभी जगह जाँच कर लेनी चाहिए कि सब लोग सो गए हैं या नहीं? और जब पता चले कि सब लोग सो गए हैं तब आपको भी दौड़ना बंद कर देना चाहिए और ओढ़कर सो जाना चाहिए। लोग सो गए हों और आप अकेले बेकार ही भागदौड़ करें, वह कैसा है? वह क्या है? वह लोभ नाम का गुण है, जो परेशान करता है।

हमारा कंपनियों में पहले नंबर आने लगा न, तब मन में पावर घुस गया कि यह तो दिमाग़ बहुत अच्छा काम कर रहा है! लेकिन तब तो अक्ल नहीं थी, कमअक्ल थी, परेशानी मोल लेने का संग्रहस्थान था। जो परेशानी कम करे, उसे अक्ल कहते हैं! हाँ, जो आने वाली परेशानी वह अपने पास न आए, यदि बीच में कोई और ही वह ताज पहन ले तो वह परेशानी उसके पास चली जाएगी।

इन लोगों का तो तरीका ही गलत है, रिवाज़ ही पूरा गलत है! तो इन लोगों के रीति-रिवाज़ के अनुसार दौड़कर पहला नंबर लाने के बाद भी फिर हमारा आखिरी नंबर आया, फिर मैं समझ गया कि यह दग़ा है! मैं तो वहाँ भी दौड़ा हूँ, खूब दौड़ा हूँ, लेकिन उसमें पहला नंबर लाने के बाद आखिरी नंबर आया। तब प्रश्न हुआ कि, 'यह कैसा चक्कर है? यह तो फँसने की जगह है!' इसमें तो कोई हल्का आदमी, जब चाहे तब हमें मटियामेट कर सकता है। ऐसा कर सकता है या नहीं? पहला नंबर आने के बाद दूसरे दिन ही थका देता है! तब हम समझ गए कि इसमें पहला नंबर आने के बाद फिर आखिरी नंबर आता है, इसलिए घुड़दौड़ में उतरना ही नहीं है।

हम तो सिर्फ चैन से ही रहे हैं। पहले तो रास्ते ऐसे टेढ़े-मेढ़े थे न, तो अंदर हिसाब चलता था कि यह रास्ता ऐसे मुड़कर वापस उस तरफ जा रहा है! पूरा वर्तुल हो, तो एक का तीन गुना हो जाएगा, तो यह आधा वर्तुल डेढ़ गुना होता है तो डेढ़ गुना रास्ता चलने के बजाय सीधा ही चला। शुरू से ही लोगों के रास्ते पर नहीं चला, मेरा रास्ता आम था ही नहीं। आम रास्ते से व्यापार भी नहीं। अलग ही व्यापार! रीत भी अलग और रस्म भी अलग। सभी लोगों से कुछ अलग और घर में कभी रंग-रोगन नहीं

करवाया। दीवारों को रंगना हो तो अपने आप ही रंग जाएँ!

इसलिए हम तो यही एक शब्द कहते हैं कि, 'हम में अब बरकत नहीं रही।' बरकत तो हमने देख ली! बहुत दौड़े, खूब दौड़े! यह तो मैं सार निकालकर यह अनुभव बता रहा हूँ। अनंत जन्मों से दौड़ा था, वह तो सब बेकार गया। 'टॉप' पर बैठे रहे, उस तरह से दौड़ा हूँ, लेकिन सभी जगह मार खाई। इसके बजाय तो भागो न, यहाँ से! अपनी असली जगह ढूँढ निकालो, वाह.... जाइ गैन्टिक!

अर्थात् अगर ऊपर से देवता भी आकर कहें, 'आपको इस घुड़दौड़ में पहला नंबर दे रहे हैं।' तब भी कहेंगे, 'नहीं, ये दादा उस जगह पर जाकर आएँ हैं, उस जगह की बातें बता रहे हैं और वह हमें सच लगा। हमें घुड़दौड़ चाहिए ही नहीं।'

हमारे संबंधी के साथ पैसे से संबंधित बात निकली न, तब मुझे कहते हैं, 'आपने तो बहुत अच्छा कमा लिया है।' मैंने कहा, 'मेरे पास ऐसा कुछ है ही नहीं। और कमाई में तो, आपने कमाया है। वाह... मिलें वगैरह सब रखी हैं। कहाँ आप और कहाँ मैं!? न जाने आपने क्या सीखा कि इतना सारा धन इकट्ठा हो गया। मुझे इस बारे में कुछ नहीं आता। मुझे तो उसी बारे में आया।' ऐसा कहा, इसलिए फिर हमारा उनसे कोई लेना-देना ही नहीं रहा न! 'रेस-कोर्स' ही नहीं रहा न! हाँ, कुछ लेना-देना ही नहीं। कहाँ उनके साथ स्पर्धा में उतरना था?

लोग हमेशा ही ऐसी स्पर्धा में रहते हैं, लेकिन मैं कहाँ उनके साथ दौडूँ? उन्हें इनाम लेने दो न! हमें देखते रहना है। अब, अगर स्पर्धा में दौड़ेंगे तो क्या दशा होगी? घुटने वगैरह छिल जाएँगे। इसलिए अपना तो काम ही नहीं है।

सूत्र-6

अनंत जन्म 'इस' 'रेस-कोर्स' में दौड़ता रहेगा फिर भी अंतिम दिन तो तू ठगा जाएगा, ऐसा है यह जगत्! सब व्यर्थ जाएगा! ऊपर से बेहद मार खानी पड़ेगी! इसके बजाय भागो यहाँ से, अपनी 'असली जगह' ढूँढ निकालो! जो अपना 'मूल स्वरूप' है!

मैंने तो पैसों का हिसाब निकाला। मैंने सोचा, 'हम पैसा बढ़ाते रहें तो कहाँ तक बढ़ेगा?' फिर हिसाब लगाया कि इस दुनिया में किसी का पहला नंबर नहीं आया है। लोग कहते हैं कि, 'फोर्ड का पहला नंबर है' लेकिन चार साल बाद किसी दूसरे का नाम सुनने को मिलता है। यानी, किसी का भी नंबर टिकता नहीं है। बेकार ही दौड़-भाग करते रहें, इसका क्या अर्थ है? पहले घोड़े पर इनाम होता है, दूसरे पर थोड़ा देते हैं और तीसरे को भी देते हैं। चौथे को तो झाग निकाल-निकालकर मर जाना है? मैंने कहा, 'मैं क्यों इस रेस-कोर्स में उतरूँ?' ये लोग तो चौथा, पाँचवाँ, बारहवाँ और सौवाँ नंबर देंगे न? फिर, हम क्यों बेकार मेहनत करें? क्या फिर झाग नहीं निकलेगा? पहला आने के लिए दौड़े और आए बारहवें, फिर तो चाय भी नहीं पिलाते हैं। आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : सही है।

दादाश्री : अर्थात् यह सारा हिसाब निकाल लिया था। दादा का गणित! बहुत अच्छा गणित है। यह मैथेमैटिक्स इतना ज़्यादा अच्छा है। एक साहब तो कह रहे थे, कि 'दादा का यह गणित तो समझने जैसा है।'

दौड़, दौड़, दौड़! पर किसलिए? नंबर लगने वाला हो तो, चलो चलते हैं! देह का जो होना होगा, वह होगा लेकिन यह तो नंबर भी

नहीं और इनाम भी नहीं, कुछ भी नहीं और झाग ही झाग! न तो स्त्री में रुचि थी, न अन्य किसी में रुचि। बस, इसी में दौड़, दौड़, दौड़! बाकी सभी जगह से नीरस हो गया, खाने में भी कोई रुचि नहीं, डॉलर में ही रुचि!

क्या यह गणित सीखने जैसा नहीं लगता?

प्रश्नकर्ता : आप जिस तरह से बता रहे हैं, उसका तो कोई वर्णन करने जैसा ही नहीं है। आजकल ऐसा ही हो गया है।

दादाश्री : यानी ये तो अनुभव की बातें बता रहा हूँ न! मुझे जो अनुभव हुआ है वही!

सूत्र-7

संसार का सार क्या है? नफा या नुकसान? बारह कमरे वाले को भी कमी है और दो कमरे वाले को भी कमी है। कमी कमरों में नहीं है, तुझ में ही है। उसे तू ढूँढ निकाल न!

यह सब तो मैंने पिछले अनुभव से निष्कर्ष निकाला था, बाकी, मैं व्यापार करते समय भी पैसों के बारे में नहीं सोचता था। पैसों के बारे में सोचने वाले जैसा फूलिश(मूर्ख) और कोई है ही नहीं! यह सब तो भाग्य में लिखा हुआ है! घाटा भी भाग्य में लिखा हुआ है। बिना सोचे भी नुकसान होता है या नहीं होता है?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : और फायदा?

प्रश्नकर्ता : फायदा भी होता है।

दादाश्री : यानी कि यह तो भाग्य में लिखा हुआ है! मैं तो बचपन से ही समझ गया था कि यह तो भाग्य में लिखा जा चुका है।

ये तो बेकार ही मेहनत करते हैं। ये सब तो लेकर आए हुए हैं। ये बाल उगते रहते हैं या नहीं? और चिंता न करें फिर भी उगते हैं न?

प्रश्नकर्ता : उगते हैं।

दादाश्री : इन आँखों में जो रोशनी रहती है, उसके लिए यदि ऐसा कहा होता कि जब आप प्रयत्न करोगे तभी रोशनी रहेगी। तो तीन दिन में अंधे हो गए होते। यह तो कुदरत के अधीन है न! यह ज्ञानरस तो इतनी सारी बारीक नसों में से बहता है, वे जो रोशनी रखती हैं, वे बाल से भी अधिक पतली नसें होती हैं। और डॉक्टर के हाथ में सौंप दें न तो तीन दिन में अँधा कर देगा। यह कुदरत इतनी सुंदर है! उस कुदरत का हमें उपकार मानना चाहिए।

बेकार ही पैसों की यह हाय-हाय क्या करनी? अरे! नुकसान होता है, वह भी तो बिना सोचे ही होता है! तो क्या फायदा, सोचने पर आता होगा? बल्कि सोचने से तो कम हो जाता है!

आप अपना काम करते जाओ। सुबह सब आठ बजे दुकान खोलते हों, तो आपको भी आठ बजे दुकान खोलनी है। सब नौ बजे खोलें तो आपको भी नौ बजे खोलनी है। सब नौ बजे खोलते हों तो आपको वहाँ पाँच बजे जाकर नहीं बैठ जाना है। और रात साढ़े दस बजे सब सो जाते हों तो आपको समझ जाना है कि सब सो गए हैं, तब ऐसा करके आपको भी सो जाना चाहिए। फिर सोचना, करना नहीं है? कल क्या होगा उसका विचार आज नहीं करना है। सब सो गए हैं तो क्या मैं अकेला ही ऐसा मूर्ख हूँ जो जाग रहा हूँ? बाहर देखने पर क्या ऐसा समझ में नहीं आता?

प्रश्नकर्ता : समझ में तो आता है लेकिन

मन उछल-कूद करता है कि कल का काम भी आज ही निपटा दूँ न!

दादाश्री : हाँ, मन उछल-कूद करेगा लेकिन मन से कहना कि, 'देखो, सब सो चुके हैं। तुम बेकार की शिकायत करोगे तो उसमें कुछ मज़ा नहीं आएगा। सब सो चुके हैं और तू अकेला बुद्धि वाला बेकार ही क्यों जग रहा है?' यह तो, रात भर जागते रहेगा फिर भी सुबह कोई फायदा नहीं होगा बल्कि देर से उठेगा।

यह सब मैंने ऑन ट्रायल (प्रयोग) कर लिया है, हाँ! पूरी लाइफ पूरा ट्रायल किया है। मैं हर एक चीज़ का पूरा ट्रायल लेकर ही आगे बढ़ा हूँ, ऐसे ही नहीं बढ़ा हूँ। और कितने ही जन्म ट्रायल से ही (अनुभव) चला हूँ। तभी तो मैं आपको इन अनुभवों की पूरी बातें बता सकता हूँ और तभी तो समाधान होता है न! यदि समाधान न हो तो व्यक्ति उलझन में रहता है।

सूत्र-8

अपना नियम क्या कहता है कि रुपये लौटाने का आपका भाव नहीं बिगड़ना चाहिए, तो एक दिन ज़रूर आपके पास रुपये आएँगे और कर्ज़ा चुका पाओगे! कोशिश करना आपके हाथ में नहीं है लेकिन भाव करना आपके हाथ में है। कोशिश करना औरों की सत्ता में है। भाव का फल मिलता है। वास्तव में भाव भी परसत्ता है लेकिन भाव करने से उसका फल मिलता है।

प्रश्नकर्ता : दादा, यदि हमने किसी से पैसे लिए हैं और हमारे पास उसे लौटाने की सुविधा नहीं है तो क्या करें?

दादाश्री : मान लीजिए कि मैंने एक लाख रुपये उधार लिए हैं और जब वह लेने आए तब मेरे पास देने की सुविधा नहीं हो, छः महीने तक, बारह महीने तक तो मुझे उसे कहना होगा कि, 'थोड़ा समय लगेगा।' यदि वह उल्टा-सुल्टा बोले तो कह देना कि, 'भाई! समता रखो, मैं लौटा दूँगा।' हमें दिल से इनका एक-एक पैसा लौटा देना है। यानी कि उन्हें कह देना कि, 'भाई! बीस लाख का कर्ज़ है। जब आएगा तब मिलेगा। देने तो अवश्य हैं ही।'

अभी हम किसी भी व्यक्ति को ऐसा कह सकते हैं कि, भाई चाहे कितने भी व्यापार करो, घाटा हो तो भी हर्ज नहीं है, लेकिन मन में एक भाव तय कर लेना कि मुझे सभी के पैसे चुका देने हैं। क्योंकि पैसा किसे प्यारा नहीं होता, यह बताओ। किसे प्यारा नहीं होता? हर किसी को होता है। यह तो अपने अपने बेटे को एक रुपये का नमकीन नहीं दिलाते और ऊसको पाँच हज़ार उधार देते है। यानी पैसा तो सभी को प्यारा होता है। इसलिए, किसी का पैसा डूब जाए, ऐसा भाव तो आपके मन में आना ही नहीं चाहिए। चाहे कुछ भी करके मुझे लौटाने ही हैं, शुरू से ही ऐसा डिसिज़न रखना चाहिए। यह बहुत बड़ी चीज़ है। किसी और चीज़ में दिवाला निकाला होगा तो चलेगा लेकिन पैसे का दिवाला नहीं होना चाहिए। क्योंकि पैसा तो दुःखदायी है, पैसे को तो ग्यारहवाँ प्राण कहा गया है। इसलिए किसी के भी पैसे नहीं डुबोने चाहिए, वह सब से बड़ी चीज़ है।

मान लो कि किसी साहब ने रिटायर होने के बाद मुंबई जाकर कोई बड़ा सौदा किया। कमाने की लालच तो होती है न? उसमें उन्हें कुछ दो-तीन लाख रुपयों का नुकसान हुआ, तो क्या हाथ खड़े कर देने चाहिए? ऐसे में छोटे से मकान रहना पड़े तब भी कहना कि, 'हमें रुपये वापस लौटाने ही हैं', ऐसा तय करे न, तो साल-दो साल में सब ठीक हो जाएगा, आत्मा की शक्तियाँ अनंत हैं।

आजकल तो दस-बीस लाख रुपये दबाकर फिर दिवाला निकाल लेते हैं। वह तो बहुत गलत कहा जाएगा। खुद के अनंत जन्म बिगाड़ लिए हैं, किसी के भी पैसे दबाने नहीं चाहिए।

नियम ऐसा है कि पैसे लेते समय ही तय कर लिया हो कि इसके पैसे मुझे लौटाने हैं। ऐसा तय करके लेना चाहिए।

जब हमें अड़चन हो तब हमें इतना तो देख लेना चाहिए कि अपना भाव शुद्ध रहता है या नहीं? तब ज़रूर लौटा सकेंगे, चिंता करने जैसा नहीं है।

हमने किसी से रुपये लिए हों और हमारा भाव शुद्ध रहे तब समझना कि ये पैसे हम लौटा पाएँगे। फिर उसके लिए चिंता नहीं करनी है। भाव शुद्ध रहता है या नहीं, उतना ही देखना है, यह उसका लेवल है।

भाव शुद्ध होना ही चाहिए। भाव यानी, खुद के अधिकार से आप क्या करते हो? तब कहें कि, 'यदि उतने रुपये होते तो पूरे आज ही लौटा देता!' इसे शुद्ध भाव कहते हैं। भाव में तो ऐसा ही रहता है कि जल्द से जल्द कैसे लौटा दूँ।

सूत्र-9

क्या खाना खाने की ज़रूरत नहीं है? क्या संडास जाने की ज़रूरत नहीं है? ज़रूरत है। उसी तरह लक्ष्मी की भी ज़रूरत है। जैसे संडास याद किए बिना आ जाती है, उसी तरह लक्ष्मी भी याद किए बिना आती है।

अभी जो है उसे तो लक्ष्मी ही नहीं कहेंगे। यह तो पापानुबंधी पुण्य वाली लक्ष्मी है! अज्ञान दशा में जो तप किए थे उससे पुण्य बंधन हुआ था। उसीका फल आया है, उससे लक्ष्मी आई है। यह लक्ष्मी तो व्यक्ति को पागल बना देती है। इसे सुख कहेंगे ही कैसे? सुख तो, पैसों का विचार न आए, उसे सुख कहते हैं। हमें तो साल में एकाध दिन ही विचार आते हैं कि जेब में पैसे हैं या नहीं हैं!

प्रश्नकर्ता : बोझ जैसा लगता है?

दादाश्री : नहीं, बोझ तो हमें रहता ही नहीं। और हमें तो इस बारे में सोचना ही नहीं पड़ता न! किसलिए सोचना है? सबकुछ आगे-पीछे तैयार ही होता है। जिस तरह खाने-पीने का आपके टेबल पर आता है या नहीं? कि सुबह से ही सोचने बैठ जाते हो? क्या माला फेरते रहते हो? कि 'खाना मिलेगा या नहीं, खाना मिलेगा या नहीं?' क्या ऐसा करते रहते हो? क्या खाने के लिए जाप नहीं करना पड़ता या सुबह जल्दी उठकर जाप करते हो?

प्रश्नकर्ता : किसी को जाप करना भी पड़ता होगा।

दादाश्री : किसी और की चिंता क्यों कर रहे हो? क्या आपको कभी करना पड़ा?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : नहाने के लिए गरम पानी मिलेगा या नहीं, मिलेगा या नहीं, इस तरह रात से सुबह तक सोचते रहते हो? क्या इस तरह जाप करने की ज़रूरत पड़ती है? फिर भी सुबह नहाने के लिए गरम पानी मिलता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : मिलता है।

दादाश्री : ऐसा है, जो नेसेसिटी (ज़रूरी) है, वह नेसेसिटी अपने टाइम पर मिल ही जाती है। उसका ध्यान करने की ज़रूरत नहीं है। इसीलिए तो कहा है न, लक्ष्मी तो हाथ का मैल

है। जैसे पसीना आए बिना नहीं रहता, उसी तरह लक्ष्मी भी आए बिना नहीं रहती। किसी को अधिक पसीना आता है तो किसी को कम पसीना आता है। इसी तरह किसी को अधिक लक्ष्मी मिलती है तो किसी को कम लक्ष्मी मिलती है। बात तो समझनी पड़ेगी न?

लक्ष्मी तो हाथ का मैल है, वह तो नैचुरल आने वाली है। आपको इस साल पाँच हज़ार सात सौ पाँच रुपये और तीन आने का हिसाब में होगा न, वह हिसाब के बाहर कभी जाता नहीं है और फिर भी जो अधिक आता हुआ दिखाई देता है, वह तो बुलबुले के समान फूट भी जाता है लेकिन जितना हिसाब है उतना ही रहेगा। आधी पतीली दूध हो और नीचे लकड़ी जलाकर, दूध की पतीली ऊपर रख दें, तो क्या दूध पूरी पतीली जितना हो जाएगा न? उफनने से पूरी पतीली भर जाती है लेकिन क्या वह भरा हुआ टिकता है? वह उफना हुआ टिकता नहीं है। यानी जितना हिसाब होगा उतनी ही लक्ष्मी रहेगी। यानी लक्ष्मी तो अपने आप आती ही रहती है। मैं 'ज्ञानी' बना हूँ, हमें सांसारिक विचार ही नहीं आते, फिर भी लक्ष्मी आती रहती है न! आपके पास भी अपने आप आती है, लेकिन आप काम करने के लिए बाध्य हो। आपके लिए अनिवार्य क्या है? वर्क (काम) है।

जिस तरह, हमारा हाथ ठीक रहेगा या पाँव ठीक रहेगा, क्या उसके बारे में रात-दिन सोचना पड़ता है? नहीं, क्यों? क्या हाथ-पाँव की हमें ज़रूरत नहीं? है, लेकिन उस बारे में सोचना नहीं पड़ता। उसी तरह, लक्ष्मी के बारे में नहीं सोचना चाहिए। हमारा हाथ यहाँ दुःख रहा हो, तो उसे ठीक करने जितना ही सोचना पड़ता है। ऐसा कभी सोचना पड़े, वह सिर्फ उतने समय के लिए ही, बाद में सोचना ही नहीं है। दूसरी झंझट में नहीं पड़ना है। क्या लक्ष्मी के स्वतंत्र ध्यान में डूबना चाहिए? एक ओर लक्ष्मी का ध्यान हो तो दूसरी ओर अन्य ध्यान चूक जाते हैं। स्वतंत्र ध्यान तो लक्ष्मी का ही नहीं, बल्कि स्त्री का भी ध्यान नहीं करना चाहिए। स्त्री का ध्यान करोगे तो स्त्री जैसे हो जाओगे! लक्ष्मी के ध्यान में रहोगे तो चंचल हो जाओगे। लक्ष्मी भी घूमती रहती है और वह भी घूमता रहता है। लक्ष्मी तो बड़ा रौद्रध्यान है, वह आर्तध्यान नहीं है, रौद्रध्यान है क्योंकि खुद के घर खाने-पीने का है, सब है, लेकिन अभी भी लक्ष्मी जी की और अधिक आशा रखता है। उससे उतनी किसी और के वहाँ कमी हो जाती है। दूसरों के वहाँ कमी हो जाए, उतना अनुपात भंग मत करो, वर्ना आप गुनहगार बन जाओगे। अपने आप सहज रूप से आए तो उसके लिए आप गुनहगार नहीं हो! सहज रूप से तो पाँच लाख आएँ या पचास लाख आएँ। लेकिन आने के बाद लक्ष्मी को रोककर नहीं रखना चाहिए। लक्ष्मी तो क्या कहती है? हमें रोकना मत! जितनी आई उतनी लौटा दो।

सूत्र-10

यदि दृष्टि बदल जाए कि मेरे यहाँ सोफा नहीं है, तो फिर सोफा उधार ले आता है और डेढ़ प्रतिशत ब्याज देता है! 'नेसेसिटी' कितनी है, सब से पहले वह ध्यान में रहना चाहिए।

ये तो चिंता करते हैं, वह भी पड़ोसियों को देखकर। पड़ोसी के घर में गाड़ी है और अपने घर में नहीं है! अरे! जीवन-निर्वाह के लिए कितना चाहिए? तुम एक बार तय कर लो कि, 'इतनी-इतनी मेरी ज़रूरतें हैं।' जैसे कि घर में खाने-पीने का पर्याप्त होना चाहिए। रहने के लिए

घर चाहिए। घर चल सके उतनी लक्ष्मी चाहिए। उतनी तो आपको मिल ही जाएँगी। लेकिन यदि पड़ोसी ने बैंक में दस हज़ार रखे हों, तो आपको अंदर खटकता रहता है। उसी से तो दु:ख उत्पन्न होते हैं। दु:ख को तो खुद ही आमंत्रण देते हैं!

एक ज़मींदार मेरे पास आए और मुझसे पूछने लगे कि, 'जीवन निर्वाह के लिए कितना चाहिए?' मेरे पास हज़ार बीघा जमीन है, बंगला है, दो कार है और अच्छा बैंक बैलेन्स भी है तो मुझे कितना रखना चाहिए?' तब मैंने कहा, 'देखो भाई, हर एक की ज़रूरतें कितनी होनी चाहिए इसका हिसाब उसके जन्म के समय कितना वैभव था, उस आधार पर सारी ज़िंदगी का स्तर आप तय करो। दरअसल, यही नियम है। ये सब तो एक्सेस में जाता है और एक्सेस तो ज़हर है, मर जाओगे!'

सूत्र-11

जिस तरह इन दवाईयों की 'एक्सपायरी डेट' लिखते हैं, उसी तरह लक्ष्मी की भी ग्यारह साल की 'एक्सपायरी डेट' होती है।

रुपयों का नियम कैसा है कि कुछ दिन टिकते हैं और फिर अवश्य चले ही जाते हैं। रुपया बदलता ज़रूर है। फिर वह मुनाफा लेकर आए, नुकसान लेकर आए या ब्याज लेकर आए, लेकिन बदलता ज़रूर है। वे स्थिर नहीं रहते हैं। वह स्वभाव से ही चंचल है इसलिए यह ऊपर तो चढ़ जाता है लेकिन ऊपर उसे बंधन लगता है। उतरते समय उतर नहीं पाता और चढ़ते समय तो जोश में चढ़ जाता है। चढ़ते समय तो जोश में ऐसे पकड़-पकड़कर चढ़ता है, लेकिन उतरते समय जैसे बिल्ली मटकी में ज़ोर लगाकर मुँह डालती है, और फिर निकालते वक्त कैसा होता है? ऐसा ही इसमें होता है।

यह जो अनाज है, वह तीन-पाँच साल में निर्जीव हो जाता है, वह फिर नहीं उगता।

ग्यारह साल में पैसे बदल जाते हैं। पच्चीस करोड़ का आसामी हो लेकिन ग्यारह साल तक यदि उसके पास एक आना भी न आया हो तो वह खत्म हो जाता है। जैसे इन दवाइयों की 'एक्सपायरी डेट' लिखते हैं, वैसे ही लक्ष्मी की भी ग्यारह साल की 'एक्सपायरी डेट' होती है।

प्रश्नकर्ता : लोगों के पास पूरी ज़िंदगी लक्ष्मी रहती है न?

दादाश्री : जैसे आज सन् 1977 है, तो हमारे पास आज सन् 1966 से पहले की लक्ष्मी नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता : क्या ग्यारह वर्ष का ही नियम है?

दादाश्री : जैसे इन दवाइयों में दो साल की 'एक्सपायरी डेट' होती है, छ: महीनों की होती है, अनाज की तीन साल की होती है, वैसे ही लक्ष्मी जी की ग्यारह साल की होती है।

प्रश्नकर्ता : पैसों का चार जगहों पर निवेश करना चाहिए, ऐसा आपने कहा है। तो वे चार जगह कौन सी हैं?

दादाश्री : एक तो बैंक में, हमें व्यवहार चलाने के लिए चाहिए न? नकद! फिर, मकान में, अचल संपत्ति में! फिर चल-अचल संपत्ति में यानी सोना और अंत में व्यापार में।

प्रश्नकर्ता : यह ज़रा विस्तार से समझाइए न?

दादाश्री : हमेशा रुपये का स्वभाव कैसा है? चंचल। इसलिए दुरुपयोग न हो उस तरह से आपको सदुपयोग करना चाहिए। क्योंकि ऐसा

नियम है कि उन्हें स्थिर नहीं रखना चाहिए। संपत्ति कितने प्रकार की कही गई है? तब कहे कि, एक, चल संपत्ति! चल संपत्ति यानी ये डॉलर और ऐसा सब और दूसरी, 'अचल संपत्ति' यानी मकान इत्यादि। पर उनमें से भी अधिक समय तक अचल संपत्ति ही रहती है। यह 'अचल-चल संपत्ति' टिकती है, और नकद डॉलर इत्यादि हों न, वे तो जाएँगे ही, ऐसा समझना। मतलब, नकद का स्वभाव कितने समय का है? दस साल के बाद ग्यारहवें साल तक नहीं टिकते। फिर सोना इत्यादि का स्वभाव चालीस-पचास साल टिकने का है और अचल संपत्ति का स्वभाव सौ साल टिकने का है। यानी सब की अवधि अलग-अलग होती है लेकिन अंत में तो सब चले ही जाना है। इसलिए यह सब समझकर करना चाहिए। ये बनिए पहले क्या करते थे? नकद रकम पच्चीस प्रतिशत व्यापार में लगाते थे, पच्चीस प्रतिशत हाथ में रखते थे, पच्चीस प्रतिशत सोने में और पच्चीस प्रतिशत मकान में लगाते थे। इस प्रकार पूँजी निवेश करते थे। बड़े पक्के लोग! अभी तो बच्चों को ऐसा सिखाया भी नहीं जाता! क्योंकि अब तो उतनी पूँजी ही नहीं रही, तो क्या सिखाएँगे?

पैसों का काम ऐसा है कि कभी भी ग्यारहवें साल में पैसे खत्म हो जाते हैं। दस साल तक चलते हैं। यह बात खरे पैसों की है। खोटे पैसों की तो बात ही अलग है! खरे पैसे ग्यारहवें साल तक खत्म हो जाते हैं!

प्रश्नकर्ता : यानी चले जाते हैं क्या, दादा?

दादाश्री : वैसा स्वभाव ही है। चंचल स्वभाव। तब लोग क्या कहते हैं? नहीं, हम नहीं निकालते! अभी सन् 1985 है तो बताओ, ग्यारह साल पहले कौन सा सन् था?

प्रश्नकर्ता : चौहत्तर।

दादाश्री : तब सन् 1974 के पहले का कुछ भी धन अपने पास नहीं होगा! यह चौहत्तर के बाद जितना धन कमाया उतना यदि दस साल में आप नहीं कमाए होते तो खत्म!

दस साल बाद लक्ष्मी चली जाती है तब ये लोग कहते हैं, 'मेरे तो अठारह सालों से पैसे बैंक में जमा हैं। वे तो टिके ही हैं न?' तब हम कहते हैं, 'नहीं, अभी आपके पास कौन सी लक्ष्मी होगी? सन् 1975 के बाद की ही होगी। वह तो आप हिसाब निकालोगे तब पता चल जाएगा। सन् 1975 के पहले की तो कहीं खर्च हो ही गई होगी। यह तो, सन् 1975 के बाद के दस सालों में जो था वह होगी। हिसाब निकालोगे तो पता चलेगा या नहीं? अब जब सन् 1986 आएगा तब सन् 1976 के बाद की लक्ष्मी होगी। यदि एक दशक ही व्यक्ति का खराब समय आ जाए तो खत्म हो जाता है! उड़ जाता है! अब ज़्यादा कल्पनाएँ करने की ज़रूरत नहीं है। सब 'व्यवस्थित' है। आराम से सो जाना चाहिए। ये सब झंझटें तो चिंता करने वाले के लिए हैं! उन्हें ये सारी झंझटें चाहिए! वर्ना पूरी रात सोना कैसे रास आएगा? इसलिए थोड़ी-थोड़ी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, व्यापार में तो स्पेक्युलेशन (अंदाज) रखना ही पड़ता है न? व्यापार में स्पेक्युलेशन करें तो पैसे आते-जाते, बढ़ते-घटते रहेंगे ही। तो आप किस तरह समय बाँधते हो?

दादाश्री : मैं क्या कहता हूँ कि सन् 1974 में जो धन आया हो वह अभी खत्म हो चुका होगा।

प्रश्नकर्ता : मतलब, नकद इन्वेस्ट (निवेश) किया हुआ, घर वगैरह नहीं?

दादाश्री : नियम ऐसा है कि नकद के लिए दस-ग्यारह साल हैं। फिर चल-अचल हैं, ये सोना इत्यादि। उसके लिए कुछ साल हैं। ऐसा है, यदि सोना बेचना हो तो उसके तुरंत पैसे मिल जाते हैं इसलिए उसे चल-अचल संपत्ति कहते हैं। क्या वह डॉलर जैसा है? तो कहते हैं कि, 'नहीं।' फिर पत्नी किच-किच करती है कि सोना भी नहीं पहनने देते। इसलिए ऐसे देर-सवेर हो जाता है और मकान? लोग क्या कहेंगे? फ्रेंड्स क्या कहेंगे? यानी उसमें भी देरी हो जाती है और डॉलर? तुरंत रख आते हैं! साठ हज़ार रख आते हैं न! डॉलर हाथ में थे, वे तो रख आते हैं न! इस तरह उसका सारा हिसाब बताता हूँ। ऐसा होता है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : ईश्वर की इच्छा से, जितना आए उतना ले लेना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, वह तो उत्तम है। ईश्वर की इच्छा यानी क्या? वह तो आपका प्रारब्ध ही है। अपना ही रिएक्शन आता है। ईश्वर इसमें हस्तक्षेप नहीं करते हैं। यह अपना ही प्रारब्ध है, बस ! इसलिए इस तरह से रहना।

सूत्र-12

धन के अंतराय कब तक रहते हैं? जब तक कमाने की इच्छा हो, तब तक। धन के प्रति दुर्लक्ष हुआ कि वह ढेरों आएगा।

प्रश्नकर्ता : यह जो लक्ष्मी जी की कमाई करते हैं, वह कितनी मात्रा में कमानी चाहिए?

दादाश्री : ऐसा कुछ नहीं है। रोज़ सुबह नहाना पड़ता है न? फिर भी क्या कोई सोचता है कि एक ही लोटा मिलेगा तब क्या करूँगा? इसी तरह लक्ष्मी का विचार नहीं आना चाहिए। डेढ़ बाल्टी मिलेगी वह तय ही है और दो लोटे, वह भी तय ही है। उसमें कोई कम-ज़्यादा नहीं कर सकता। इसलिए मन-वचन-काया से लक्ष्मी के लिए आप प्रयत्न करना, इच्छा मत करना।

लक्ष्मी जी तो बैंक बैलेन्स है। वह बैंक में जमा हुई होगी, तभी मिलेगी न? यदि कोई लक्ष्मी की इच्छा करे तो लक्ष्मी जी कहती हैं कि, 'इस जुलाई में तेरे पैसे मिलने वाले थे वे अगली जुलाई में मिलेंगे।' और यदि कहे कि, 'मुझे पैसे नहीं चाहिए', वह भी बड़ा गुनाह है। लक्ष्मी जी का तिरस्कार भी नहीं और इच्छा भी नहीं करनी चाहिए। उन्हें तो नमस्कार करना चाहिए। उनके लिए तो विनय रखना चाहिए क्योंकि वे तो हेड-ऑफिस में हैं।

लक्ष्मी जी कहती हैं कि, 'जिस गली में जिस समय रहना हो, उसी समय रहना चाहिए और हम समय-समय पर भेज ही देते हैं।' तुम्हारे सारे ड्राफ्ट वगैरह सब समय पर आ ही जाएँगे। लेकिन साथ में मेरी इच्छा मत करना। क्योंकि नियमानुसार जितना होता है, उसे ब्याज के साथ भेज देते हैं। जो इच्छा नहीं करता है, उसके लिए समय पर भेज देते हैं।' लक्ष्मी जी और क्या कहती हैं कि, 'तुम्हें मोक्ष में जाना हो तो हक़ की लक्ष्मी मिले वही लेना। किसी की लक्ष्मी छीनकर या धोखा देकर मत लेना।'

एक भाई यहाँ आए थे। उन बेचारे को व्यापार में हर महीने नुकसान हो रहा था, तो पैसों के लिए बेचैन रहते थे। मैंने उनसे कहा, 'पैसों की बात क्यों करते हो? पैसों को याद करना बंद कर दो।' तब से उनके पैसे बढ़ने लगे। फिर हर महीने तीस हज़ार रुपयों का मुनाफा होने लगा। वर्ना पहले तो बीस हज़ार रुपयों का नुकसान होता था। तो क्या पैसों को याद करना चाहिए? लक्ष्मी जी तो भगवान की पत्नी कहलाती हैं। क्या उनका नाम लेना चाहिए?

सूत्र-13

सांसारिक सुख 'नॉर्मेलिटी' में है। ज़्यादा भी नहीं और कम भी नहीं, उसी को सुख कहते हैं।

लक्ष्मी तो कैसी है? कमाने में दुःख, संभालने में दुःख, रक्षण करने में दुःख और खर्च करने में भी दुःख। घर में लाख रुपये आ जाएँ तो उन्हें संभालने की परेशानी हो जाएगी। कौन से बैंक में रखना सेफसाइड है, वह खोजना पड़ेगा। फिर यदि रिश्तेदारों को पता चले तो तुरंत दौड़ पड़ेंगे। सारे मित्र भी दौड़ पड़ेंगे, कहेंगे, 'अरे यार! मुझ पर इतना भी विश्वास नहीं है? सिर्फ दस हज़ार चाहिए।' फिर उसे मजबूरी में देने पड़ते हैं। पैसे इकट्ठे हों जाएँ तब भी दुःख और कम हो जाएँ तब भी दुःख। नॉर्मल हो तो ही अच्छा है, वर्ना फिर लक्ष्मी खर्च करने में भी दुःख होगा।

भगवान ने क्या कहा था कि नर्मदा जी में पानी आए तो वह नर्मदा जी के तट के सामर्थ्य के अनुसार ही होता है। लेकिन यदि उसके सामर्थ्य से अधिक पानी आए तो? फिर किनारे वगैरह सब तोड़कर आसपास के गाँव बहा देती है। लक्ष्मी जी का भी ऐसा ही है। नॉर्मल आए, वहाँ तक ठीक है। लक्ष्मी जी बिलो नॉर्मल आए तो भी फीवर और अबोव नॉर्मल भी फीवर है। अबोव नॉर्मल तो अधिक फीवर है। लेकिन दोनों ही तरह के स्टेजेस में लक्ष्मी फीवर स्वरूप हो जाती है।

मुझे कभी तंगी नहीं रही और न ही कुछ संग्रह हुआ। लाख आने से पहले ही कोई न कोई बम (व्यवहार) आ जाता और वह खर्च भी हो जाता। इसलिए कभी बहुतायत तो हुई ही नहीं और कभी तंगी भी नहीं रही। हमें तो तंगी भी न रहे और बहुतायत भी न हो तो बहुत हो गया! यदि बहुतायत हो जाए तो बहुत दुःख होता है। फिर बैंक में रखो, और ऐसी सारी परेशानी। फिर साला आता है कि, 'आपके पास तो बहुत सारे रुपये हैं, तो दस-बीस हज़ार दो!' फिर मामा का लड़का आता है, फिर दामाद आता है, कि 'मुझे लाख रुपये दो।' बहुतायत होगा तो कहेंगे न? लेकिन बहुतायत ही न हुआ हो तो? बहुतायत होने पर लोगों को क्लेश होता है।

लोग मुझे आकर बताते हैं कि, 'देखो न! हमारे दामाद आए हैं, वे लाख रुपये माँग रहे हैं। और दामाद तो इसके लिए पीछे पड़े हैं। यदि सभी को देता रहूँ तो मेरे पास क्या बचेगा?' उनकी बात भी तो सही है न? सभी को देता रहेगा तो उसके पास तो कुछ बचेगा ही नहीं न! यानी बहुतायत हुआ तो लेने आया है न! अब वहाँ, उनके साथ दामाद झगड़ा करता है, गालियाँ देता है! तब आखिरकार कहता है कि, 'मेरे पास ज़्यादा रुपये नहीं हैं। ले लो, ये बीस हज़ार ले जाओ और अब वापस मत आना।' अरे! जब देने ही थे तब क्लेश करके क्यों दिए, उसके बजाय समझाकर देने थे न! वर्ना, एक बार झूठ ही बोल देना चाहिए कि, 'ये सब लोग कह रहे हैं कि मेरे पास दस लाख आए हैं, लेकिन मेरा मन ही जानता है कि कितने आए हैं।' ऐसा-वैसा करके, झूठ बोलकर भी दामाद को समझा देना चाहिए जिससे लड़ाई तो नहीं होगी न! झगड़ा नहीं होगा, लेकिन ऐसा आता नहीं है न! और वह दामाद तो लाख रुपयों के लिए अड़े रहता है, बीस हज़ार लेकर नहीं जाता। इसलिए ये ज़्यादा रुपये लाए तो भाई के साथ झगड़ा, साले के साथ झगड़ा, दामाद के साथ झगड़ा। ज़्यादा रुपये आएँ तो ज़्यादा झगड़े होते हैं। जब पैसे नहीं

होते तब सब साथ बैठकर खाते-पीते और मज़े करते हैं। ऐसा है इन पैसों का काम! यानी बहुतायत हो तो दु:ख, और तंगी न रहे तो बहुत हो गया।

एक बहन कह रही थीं कि, 'इस साल इतनी अधिक बरसात हो रही है, तो अगले साल क्या होगा? फिर कमी पड़ेगी!' लोग कमी के दौरान भी आशा रखते हैं कि इस साल तो दो-तीन लाख रुपये आ जाएँ तो अच्छा। अरे, अब इसके बाद तो आने वाले सभी वर्षों में अकाल पड़ेगा! इसलिए आशा मत रखना। लक्ष्मी की बरसात एक साथ हो गई, अब तो पाँच वर्षों तक अकाल पड़ेगा। इसके बजाय यदि वह किश्तों में आएँ न, तो किश्तों में आने देना ही ठीक है, नहीं तो पूरा धन एक साथ आएगा तो सारा खर्च हो जाएगा। इसलिए ये जो किश्तें रखी हैं, वे ठीक हैं। हमें तो, सामने वाले को संतोष हो वैसा करना है। 'व्यवस्थित' जितनी लक्ष्मी भेजे उतनी स्वीकार कर लेना। कम आए और दिवाली पर दो सौ-तीन सौ कम पड़ जाएँ तो अगली दिवाली पर अधिक प्राप्ति होगी, इसलिए उसके लिए परेशान मत होना।

यह तो *पूरण-गलन* (चार्ज-डिस्चार्ज होना) स्वभाव वाला है। जितना *पूरण* हुआ है, उतना ही बाद में *गलन* भी होगा। यदि *गलन* नहीं होता न, तो भी परेशानी हो जाती। लेकिन *गलन* होता है इसलिए फिर से खा पाते हैं। यह श्वास लिया वह *पूरण* किया और उच्छ्वास किया वह *गलन* है। सब *पूरण-गलन* स्वभाव के हैं इसलिए हमने खोज की हैं कि, 'कमी भी नहीं और बहुतायत भी नहीं!' हमें हमेशा लक्ष्मी जी की तंगी भी नहीं रहती और बहुतायत भी नहीं रहती! बहुतायत यानी क्या कि लक्ष्मी जी दो-तीन साल तक जाती ही नहीं। लक्ष्मी जी तो चलती भली, वर्ना दु:खदायी हो जाएगी।

यानी बहुतायत न हो वह उत्तम और उसके जैसा पुण्यानुबंधी पुण्य कोई नहीं है। ज़्यादा जमा हो जाए तो गिनने की झंझट रहेगी न! दस हज़ार रुपये हों, तब एक-एक रुपया करके गिनने जाएँगे तो कब पार आएगा? उसके बाद एक या दो की भूल हो जाएँ तो फिर से गिनना पड़ता है। ठीक से गिनती हो जाए फिर सो जाता है। तब एक भाई मुझसे पूछने लगे कि, 'आप क्या करते हैं?' मैंने कहा, ये तो दस हज़ार गिनने की बात कर रहे हैं। लेकिन सौ की नोट के छुट्टे किसी दुकान से लेने हों तो दुकानदार कहे, 'साहब, गिन लो।' मैं कहता हूँ कि, 'मुझे आप पर पूरा विश्वास है।' शायद निन्यानवे होंगे तब एक रुपया तो गिनने की मेहनत का चला जाएगा। लेकिन उसे गिनने में टाइम बर्बाद हो जाता है न! इसलिए भले ही रुपया कम हो, गिनने की झंझट तो नहीं है न! इसलिए मैं कभी भी रुपये गिनता ही नहीं। सौ की गड्डी में तो सौ रुपये होते हैं और गिनते-गिनते दस मिनट चले जाते हैं। ऊपर से ऐसे जीभ में अँगूठा लगाता रहता है। इसके बजाय दो रुपये कम होंगे तो चलेगा। उसमें फिर यदि एक-दो कम हों न, तो सौ रुपये छुट्टे देने वाले से झगड़ा करता है, कि 'ये आपने सौ दिए लेकिन पूरे नहीं हैं, इसमें तो दो कम हैं।' तब वह कहता है, कि 'आप फिर से गिनो, बेकार में किच-किच मत करो। ज़्यादा माथापच्ची मत करो, वर्ना लाओ मेरे रुपये वापस।' तब वह वापस नहीं लौटाता और फिर से गिनने बैठ जाता है। अरे, लेते समय क्लेश, किसी को दें तब भी क्लेश ही क्लेश!! जन्म के समय 'ऊँवा-ऊँवा' करता है और मृत्यु के समय, 'डॉक्टर साहब, मुझे बचाओ, बचाओ!' करता है। कब तुम बिना क्लेश किए रहे हो! तेरा एक दिन भी आनंद में नहीं बीता। फिर भी वह खुद 'परमात्मा' है। वह क्लेश करे लेकिन हमें

तो दर्शन करने पड़ते हैं न! ऐसा है यह जगत्। अत: तंगी न रहे और संग्रह भी न हो, वही सब से अच्छा है।

सूत्र-14

कमाई हो तब खेद करना कि कहाँ खर्च करेंगे? और खर्चे आएँ तब मज़बूत हो जाना कि कर्ज़ चुकाने का संयोग मिला। कमाई ज़िम्मेदारी है और खर्च चुकाने का साधन है।

इंसान को कमाने में जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। कमाने में आलस्य करना चाहिए। जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि कमाने में बहुत जल्दबाज़ी करोगे तो सन् 1988 में जो धन मिलना होगा, वह अभी आ जाएगा, *उद्दीरणा* (भविष्य में फल देने वाले कर्मों को समय से पहले परिपक्व करके वर्तमान में खपाना) हो जाएगी, फिर सन् 1988 में क्या करोगे? इसलिए बहुत ज़्यादा धन कमाने की खटपट नहीं करनी चाहिए। व्यापार, निश्चित भाव से, शांत रूप से करना चाहिए। इस काल में नीतिमत्ता का जितना पालन हो सके, भाव से उतना करते रहना चाहिए। हाय-तौबा तो कौन करता है? जिसे अनाज अथवा कुछ कम पड़ता हो वह हाय-तौबा करता है। ऐसे अनाज की कमी पड़े, आपके ऐसे दिन तो नहीं आएँगे न? कपड़ों की कमी पड़ जाए, ऐसे दिन आते हैं?

कमाई हो तब खेद करना चाहिए कि कहाँ खर्च करेंगे? और खर्चे आएँ तो मज़बूत हो जाना चाहिए कि कर्ज़ चुकाने का संयोग मिला। कमाई, वह ज़िम्मेदारी है और खर्चा तो चुकाने का, कर्ज़ से छूटने का साधन है। धन का बोझा रखने जैसा नहीं है। बैंक में जमा हो तब 'खुशी' होती है और जब जाता है तब दु:ख होता है। इस जगत् में कुछ में भी खुशी मनाने जैसा नहीं है क्योंकि 'टेम्परेरी' है!

सूत्र-15

व्यवहार का पूरा सार कुछ है तो वह है, नीति। नीति होगी और पैसे कम होंगे, तब भी आपको शांति रहेगी। और नीति नहीं होगी और पैसे बहुत होंगे तब भी अशांति रहेगी।

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी जी के नियम क्या हैं?

दादाश्री : लक्ष्मी जी गलत तरीके से नहीं लेनी चाहिए, यही नियम है। यदि वह नियम तोड़ा जाए तो फिर लक्ष्मी जी कैसे खुश रहेंगी?

जिस दिन बिना हक़ का ले लिया जाए, उस दिन से व्यापार में बरकत नहीं रहेगी। भगवान कुछ करते ही नहीं हैं। व्यापार में तो आपकी कुशलता और आपकी नैतिकता, दोनों ही काम आएँगी। अनैतिकता से साल-दो साल ठीक चलेगा, लेकिन बाद में नुकसान होगा। यदि गलत हो जाए तो अंत में पछतावा करोगे तो भी छूट जाओगे। व्यवहार का सार यदि कुछ है, तो वह है नीति, नीति होगी और यदि पैसे कम होंगे तो भी आपको शांति रहेगी और यदि नीति नहीं होगी और पैसे ज़्यादा होंगे, फिर भी अशांति रहेगी। नैतिकता के बिना धर्म ही नहीं है। धर्म का आधार ही नैतिकता है।

प्रश्नकर्ता : लक्ष्मी की कमी क्यों पड़ती है?

दादाश्री : चोरी से। जहाँ मन-वचन-काया से चोरी न हो, वहाँ लक्ष्मी जी कृपा होती हैं। लक्ष्मी के अंतराय चोरी के कारण होते हैं। ट्रिक और लक्ष्मी, दोनों का बैर है। स्थूल चोरी बंद हो तभी तो उच्च जाति में जन्म होता है। लेकिन सूक्ष्म चोरी यानी कि ट्रिक्स करना, वह तो हार्ड रौद्रध्यान है। ट्रिक्स तो होनी ही नहीं चाहिए। ट्रिक करना किसे कहते हैं? 'एकदम शुद्ध माल है', कहकर मिलावट वाला माल देकर खुश होता

है। और यदि हम कहें कि, 'क्या ऐसा करना चाहिए?' तो वह कहता है कि, 'वैसा तो करना ही चाहिए।' लेकिन ईमानदारी की इच्छा रखने वाले को क्या कहना चाहिए कि, 'मेरी इच्छा तो अच्छा ही माल देने की है पर माल ऐसा ही है, वह चाहिए तो ले जाओ।' इतना कहें तो भी आपकी ज़िम्मेदारी नहीं रहेगी।

मन-वचन-काया से ज़रा सी भी चोरी करने वाला, बहुत मेहनत करे फिर भी लक्ष्मी मुश्किल से मिलती है। लक्ष्मी के लिए सब से बड़ा अंतराय है, चोरी। यह तो, क्या होता है कि मनुष्यपन में जो-जो मनुष्यत्व की सिद्धि लेकर आया होता है, उस सिद्धि को भुनाकर दिवालिया होता जाता है। आज ईमानदारी से बहुत मेहनत करके भी लक्ष्मी प्राप्त नहीं कर पाता। इसका अर्थ यह है कि पहले से ही मनुष्यपन ही की सिद्धि उल्टे तरीकों से भुनाकर आया है, उसी का यह परिणाम है। सब से बड़ी सिद्धि कौन सी? तब कहते हैं कि, मनुष्यपन। ऊँची जाति में जन्म लेना और वह भी हिन्दुस्तान में। इसे सब से बड़ी सिद्धि कहा गया है, क्योंकि इस मनुष्यपन से मोक्ष में जा सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : आजकल ईमानदारी से व्यापार करने जाते हैं तो अधिक परेशानियाँ आती हैं, ऐसा क्यों है?

दादाश्री : ईमानदारी से काम करने से एक ही मुश्किल आती है, लेकिन बेईमानी से काम करने पर दो प्रकार की मुश्किलें आएँगी। ईमानदारी की मुश्किलों से तो छूटा जा सकता है लेकिन बेईमानी की मुश्किलों से छूटना कठिन है। ईमानदारी तो भगवान का दिया हुआ बड़ा 'लाइसेन्स' है। उसका तो कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। क्या, आपको वह 'लाइसेन्स' फाड़ देने का विचार आता है?

सूत्र-16

लक्ष्मी सहज भाव से प्राप्त हो रही हो, तो होने देना लेकिन उस पर आधार मत रखना। आधार रखकर 'चैन' से बैठ जाओगे लेकिन वह आधार कब हट जाएगा, वह कहा नहीं जा सकता। अतः शुरू से ही संभलकर चलो ताकि अशाता (दुःख परिणाम) वेदनीय में हिल न जाओ।

कुदरत क्या कहती है? 'उसने कितने रुपये खर्च किए, वह हमारे यहाँ नहीं देखा जाता। वह तो, कौन सी वेदनीय भुगती, *शाता* (सुख परिणाम) या *अशाता,* इतना ही हमारे यहाँ देखा जाता है। रुपये न हों तब भी *शाता* भुगतेगा और रुपये हों तब भी *अशाता* भुगतेगा', इसलिए जो *शाता* या *अशाता* वेदनीय भुगतता है, वह रुपयों पर आधारित नहीं है। अभी हमारी आय कम हो, एकदम शांति हो, कोई झंझट न हो, तब हम कहें कि 'चलो, भगवान के दर्शन कर आएँ!' जबकि ये तो पैसे कमाने में रह गए। ग्यारह लाख रुपये कमाए, उसमें हर्ज नहीं है लेकिन अभी यदि पचास हज़ार का नुकसान होने लगे तो *अशाता* वेदनीय शुरू हो जाती है। 'अरे, ग्यारह लाख में से पचास हज़ार कम कर ले न!' तब कहेगा, 'नहीं, उससे तो रकम कम हो जाएगी न?' 'तो भाई, तुम 'रकम' किसे कहते हो? कहाँ से आई यह रकम? वह तो जोखिमदारी वाली रकम थी, अतः कम हो जाएँ तो चीखना मत। यह तो, रकम बढ़ने पर तुम खुश होते हो, और कम हो जाएँ तब? अरे! पूँजी तो 'अंदर' ही पड़ी हुई है, हार्ट फेल करके क्यों वह सारी पूँजी खत्म करना चाहते हो? हार्ट फेल हो तो सारी पूँजी खत्म हो जाएगी या नहीं?

प्रश्नकर्ता : हो जाएगी।

दादाश्री : तो फिर यह सब किसलिए? तब वह कहता है कि, 'मेरे लिए तो पैसों वाली पूँजी कीमती है।' अरे! क्या तुम्हें अंदर वाली पूँजी की ज़रूरत नहीं है?

पिता ने दस लाख रुपये बेटे को दिए हों और पिता कहे कि, 'अब मैं आध्यात्मिक जीवन जीऊँगा।' तब बेटा शराब में, माँसाहार में, शेयरबाज़ार इत्यादि में वे पैसे गँवा देता। क्योंकि जो पैसे गलत तरीके से इकट्ठे हुए हों वे अपने पास नहीं रहते। आज तो सच्चा धन, सच्ची मेहनत का धन ही नहीं टिकता, तो गलत धन कहाँ से टिकेगा? इसलिए पुण्य वाला धन होना चाहिए। जिसमें बेईमानी न हो, नीयत साफ हो। यदि ऐसा धन होगा तभी वह सुख देगा। वर्ना, अभी तो दूषमकाल का धन, वह भी पुण्य का ही कहलाता है लेकिन पापानुबंधी पुण्य का, जो सिर्फ पाप ही बंधवाता है। उसके बजाय उस लक्ष्मी से कहना कि, 'आप आना ही मत, यहाँ से दूर ही रहना। उसमें हमारी और आपकी दोनों की शोभा बढ़ेगी।' ये जो सब बंगले बन रहे हैं उनमें पूरा पापानुबंधी पुण्य स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यहाँ हज़ारों में से एकाध ही कोई ऐसा होगा जिनका पुण्यानुबंधी पुण्य होगा। बाकी सब तो पापानुबंधी पुण्य है। कभी भी इतनी ज़्यादा लक्ष्मी होती होगी? सिर्फ, पाप ही बाँध रहे हैं। कुछ भी भोगते-करते नहीं हैं और सिर्फ पाप ही बाँध रहे हैं। ये तो तिर्यंचगति की रिटर्न टिकट लेकर आए हुए हैं।

यह संसार ऐसा है जहाँ एक मिनट भी रहा नहीं जा सकता! ज़बरदस्त पुण्य होता है फिर भी अंदर का अंतरदाह बुझता नहीं है, अंतरदाह निरंतर रहता ही है! चारों ओर से, सारे संयोग फर्स्ट क्लास हों फिर भी अंतरदाह चलता ही रहता है, अब वह कैसे मिटेगा? पुण्य भी अंत में खत्म हो जाता है। दुनिया का नियम है कि जब पुण्य खत्म हो जाए तब क्या होता है? पाप का उदय होता है। यह तो अंतरदाह है। पाप के उदय के समय जब बाहर का दाह उत्पन्न होगा उस समय आपकी क्या दशा होगी? अत: सावधान हो जाओ! भगवान ऐसा कहते हैं।

आत्मा के लिए जीना, वह पुण्य है और संसार के लिए जीना तो निरा पाप है।

सूत्र-17

नफा देह का विटामिन है और नुकसान आत्मा का विटामिन है। फिर नुकसान रहा ही कहाँ?

यहाँ बड़ा बंगला बनवाओगे तो आप जगत् में भिखारी बनोगे। यदि छोटा घर होगा तो आप जगत् के राजा! क्योंकि यह *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) है। यदि *पुद्गल* बढ़ेगा तो आत्मा (प्रतिष्ठित आत्मा) हल्का हो जाएगा और *पुद्गल* घटेगा तो आत्मा भारी हो जाएगा। अत: ये जो दुनिया के दु:ख हैं, वे आत्मा के विटामिन हैं। ये जो दु:ख हैं, वे आत्मविटामिन हैं और सुख देह के विटामिन हैं। सुख किसके विटामिन हैं?

प्रश्नकर्ता : देह के।

दादाश्री : और दु:ख हैं, वे?

प्रश्नकर्ता : आत्मा के।

दादाश्री : फिर भी तुम आत्मा के विटामिन को, दु:ख को खाती नहीं हो बल्कि दु:ख को दूर करने की कोशिश करती हो । आत्मा का विटामिन नहीं लेती, है न? मैं तो आत्मा का बहुत सारा विटामिन ले-लेकर कैसा हो गया हूँ! अभी ही यदि पचास हज़ार की चपत लगा जाए न, तो आराम से विटामिन फाँक लूँगा! बहुत

अच्छा हुआ! और क्लेश करने से पचास हज़ार वापस मिल जाएँगे क्या? नहीं?

प्रश्नकर्ता : नहीं मिलेंगे।

दादाश्री : क्लेश करने से गए हुए वापस नहीं मिलेंगे।

प्रश्नकर्ता : वह तो समझ में आ गया। वापस नहीं मिलेंगे!

दादाश्री : यह सब किस आधार पर हुआ है, उसका कारण जानती हो?

प्रश्नकर्ता : जब पचास हज़ार गए थे तब क्लेश किया था लेकिन वापस नहीं आए! इसलिए समझ में आ गया कि नहीं आते।

दादाश्री : समझ में आ गया न! हाँ! पचास हज़ार वापस नहीं आए! तो अभी भी उम्मीद तो है न! उम्मीद नहीं रही?

प्रश्नकर्ता : उम्मीद तो है लेकिन देखने से क्या होगा?

दादाश्री : जब तक उम्मीद है, तब तक शायद थोड़ा-बहुत, कुछ आ भी जाए। आप उसे 'डेड मनी' मत कहना।

प्रश्नकर्ता : नहीं कहती।

दादाश्री : 'डेड मनी' तो मत कहना, 'दादा, अस्सी हज़ार रखे हैं, अब क्या होगा?' तब मैंने कहा, 'अब जो होना था वह तो हो गया! अब, डेड मनी न हो जाए इतना ध्यान रखना!'

आपके वे साठ हज़ार अभी तक डेड मनी नहीं हुए हैं। लेकिन यदि आप स्टीमर में जा रहे हों और साठ हज़ार के नोटों से भरा पैकेट हो, फिर बाहर डेक पर घूमने गए और वह समुद्र में गिर जाए, तब ? उसे डेड मनी कहा जाएगा। ये डेड मनी नहीं कहलाएँगे। ये तो वापस आ सकते हैं। रुपये नहीं तो दो आने-चार आने आ सकते हैं।

सूत्र-18

जब संयोग अच्छे नहीं होते तब लोग कमाने निकलते हैं। तब तो भक्ति करनी चाहिए।

हम मेहनत करें, हर तरफ से ध्यान रखें फिर भी हमें कुछ न मिले, तो हमें समझ लेना चाहिए कि हमारे संयोग अच्छे नहीं हैं। अब उस समय ज़्यादा ज़ोर लगाने से नुकसान होता है, उसके बजाय हमें आत्मा संबंधी कुछ कर लेना चाहिए। पिछले जन्म में ऐसा नहीं किया था इसीलिए तो यह झंझट हुई। जिन्हें हमारा ज्ञान मिला हो, उनकी तो बात ही निराली है लेकिन यदि हमारा ज्ञान न मिला हो, तब भी वह तो भगवान के भरोसे छोड़ देता है न! उसे क्या करना पड़ता है? 'भगवान जो करें वही सही', कहते हैं न? और बुद्धि से नापने जाएँ तो कभी समाधान मिल सके, ऐसा नहीं है!

जब संयोग अच्छे नहीं हों, तब लोग कमाने निकलते हैं। तब तो भक्ति करनी चाहिए। संयोग अच्छे न हों, तब क्या करना चाहिए? पूरा दिन आत्मा का, खुद के आत्मा का, सत्संग आदि करना चाहिए। सब्ज़ी न हो तो न लाएँ, खिचड़ी जितना तो होगा न! वह तो यदि योग होगा तो कमाता है, वर्ना फायदे वाले बाज़ार में भी नुकसान उठाता है और योग हो तो नुकसान वाले बाज़ार में भी नफा करता है। सब योग की बात है।

नुकसान या फायदा, कुछ भी अपने बस की बात नहीं है। इसलिए नैचुरल एडजस्टमेन्ट के

आधार पर चलो। दस लाख कमाने के पश्चात् एकदम से पाँच लाख का नुकसान हो जाए तो? ये तो लाख का नुकसान भी सहन नहीं कर सकते हैं न! फिर पूरे दिन रोना-धोना, चिंता करते रहते हैं! अरे, पागल भी हो जाते हैं! मैंने अब तक ऐसे कई पागल हो चुके लोगों को देखा है!

क्या रात को बारह, एक बजे या दो बजे पुरुषार्थ करना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : तब तो व्यक्ति मेन्टल हो जाएगा।

दादाश्री : ये मेन्टल तो हो ही चुके हैं, भला फिर अब और क्या मेन्टल होने हैं? पूरी दुनिया ही मेन्टल हॉस्पिटल बन गई है न! इसलिए अब दोबारा मेन्टल नहीं होगा। क्योंकि क्या डबल मेन्टल हो सकते हैं? यानी फायदा-नुकसान अपने हाथ में नहीं है। हमें तो अपना काम करते रहना है और हमारे जो फर्ज़ हैं, वे निभाने हैं।

सूत्र-19

पूरण (भरना) और गलन (खाली होना) के अलावा और क्या है? पुद्गल यानी क्या? 'पूरण-गलन', 'क्रेडिट और डेबिट' और यदि आत्मा को जानोगे तो मोक्ष हो जाएगा।

जगत् का नियम ही ऐसा है कि जो *पूरण* होता है, उसका *गलन* हुए बगैर रहता नहीं। यदि सभी लोग सिर्फ पैसे इकट्ठे कर रहे होते तो मुंबई में कोई भी व्यक्ति कह सकता था कि, 'मैं सब से अधिक धनवान हूँ।' लेकिन ऐसी संतुष्टि की बात कोई कहता ही नहीं। क्योंकि नियम ही नहीं है ऐसा!

मेरा कहना है कि गंभीरता रखो, शांति रखो। क्योंकि लोग जिस *पूरण-गलन* के लिए भागदौड़ कर रहे हैं और गुणाकार-भागाकार कर रहे हैं, वे खुद के जन्म बिगाड़ रहे हैं और बैंक-बैलेन्स में कोई बदलाव हो सके, ऐसा है नहीं। वह नैचुरल है। नैचुरल में क्या कर सकते हैं? इसलिए आपका भय निकाल रहे हैं। हम 'जैसा है वैसा' खुला कर रहे हैं कि जोड़-बाकी करना किसी के हाथ में नहीं है, वह नेचर के हाथों में है। बैंक में जमा होना भी नेचर के हाथ में है और बैंक में कम होना, वह भी नेचर के हाथ में है। वर्ना बैंक वाले एक ही खाता रखते। सिर्फ क्रेडिट ही रखते, डेबिट रखते ही नहीं। लेकिन वे जानते हैं कि डेबिट हुए बिना रहेगा नहीं। कुछ लोग तय करते हैं कि, 'अब, इस बार मुझे बैंक में एक लाख रुपये रख देने हैं। फिर उन्हें निकालने ही नहीं हैं। निकालेंगे, तब झमेला होगा न!' अरे! लेकिन लोगों ने डेबिट का खाता किसलिए रखा है? बैंक वाले जानते हैं कि ये लोग कभी न कभी रुपये निकाले बगैर रहेंगे नहीं। अंत में मरना तो है ही।

यानी यह सब नैचुरल होता रहता है, क्यों इसमें चिंता करते हो? 'डोन्ट वरी!' और गुणा-भाग करना बंद कर दो न! फिर भी आप लोग चुपचाप ओढ़कर गुणा-भाग करते हो न, कि अब यह मिल तो बनकर तैयार होने वाली है। अब दूसरा कारखाना लगाएँगे। अरे रहने दे न! ये बेटे कहते हैं कि, 'पिताजी, सो जाइए।' सब कहते हैं कि, 'ग्यारह बज गए हैं। आपकी तबीयत ठीक नहीं है। प्रेशर बढ़ गया है, तो अब आराम से सो जाइए न', लेकिन नहीं, ओढ़कर फिर योजना बनाते हैं। ओढ़कर क्यों, ताकि उसकी चंचलता कोई देख न ले। यानी जोड़-बाकी तो नैचुरल हो रहा है लेकिन गुणा-भाग वह ओढ़कर करता रहता है!

यदि इतना ही समझ लें तो फिर बैंक वाले

के साथ कोई झंझट रहेगी? उनसे पूछें कि, 'लाख रुपये आपने रखे हैं उन्हें कब निकालोगे?' वह पता नहीं है। लेकिन तू निकालेगा, वह तय है! तब कहेगा कि, 'मेरी इच्छा नहीं है।' अब रुपये निकालने की इच्छा नहीं हो न, फिर भी कब निकाल लेगा यह कहा नहीं जा सकता। अरे, तेरा खुद का तय किया हुआ भी अनिश्चित है! लेकिन क्या कहता है कि इच्छा नहीं है। तय किया हो कि नहीं ही निकालने हैं, अब तो इतने बचाने ही हैं। अरे, तू ही नहीं बचेगा तो फिर ये कैसे बचेंगे! अरे, यह किस तरह की पॉलिसी लेकर बैठे हो! इसके बजाय खा-पीकर खर्च करो न, ताज़ी सब्जियाँ आती हैं वह खाओ न आराम से! फ्रूट लाकर शांति से खाओ और पत्नी के लिए दो-चार अच्छे गहने बनवाकर दो। अरे! वह बेचारी रोज़ किच-किच करती है, फिर भी लाकर नहीं देता!

यह सब क्या है? *पूरण-गलन* है। हमने यह हमारे ज्ञान से देखकर कहा है! अब क्या किसी प्रकार का भय रहा है? एक तरफ कहते हैं कि 'व्यवस्थित है' और दूसरी तरफ कहते हैं, बैंक में जोड़-बाकी या फिर बहीखाते के अकाउन्ट में जोड़-बाकी, या फिर इन्कम टैक्स वाला ले लेगा, वह सब 'नैचुरल' है। उसके हाथ में कोई सत्ता नहीं है। वह तो बेचारा निमित्त है। लेकिन गुणा-भाग आपके हाथ में है। यह 'ज्ञान' लिया है इसलिए अब ये गुणा-भाग आप 'खुद' नहीं करते क्योंकि 'आप' तो 'आत्मस्वरूप' हो गए हो। ये गुणा-भाग तो कब तक करते थे? कब तक योजनाएँ बनाते थे? अज्ञान था, तब तक। अब यदि वैसे ओढ़कर योजनाएँ बनाएँ तो वह 'इफेक्ट' है। वे योजनाएँ अगले जन्म के लिए नहीं हैं, वे तो *निकाली* (निपटारा) योजनाएँ हैं। दो प्रकार की योजनाएँ, एक ग्रहणीय योजना और दूसरी *निकाली* योजना। ग्रहणीय योजना में भीतर अशांति रहती है। *निकाली* योजना शांत भाव से होती रहती है। योजनाएँ जो की जा चुकी हैं, उनका *निकाल* तो करना पड़ेगा न? और आपको दिन भर *निकाल* का भाव रहता है न?

आज वह कहता है कि पैसे हैं और दो साल बाद कुछ भी नहीं रहता। यानी लक्ष्मी का स्वभाव कैसा है? चंचल स्वभाव है, उस पर कोई भरोसा मत करना। उस पर बहुत आधार मत रखना। आधार सिर्फ 'आत्मा' का रखना, बाकी सभी चीज़ें चंचल हैं।

सूत्र-20

हर काम का हेतु होता है। यदि सेवा का हेतु होगा तो 'बाइ प्रोडक्ट' में लक्ष्मी मिलेगी ही। आप जिस विद्या को जानते हो, उसका उपयोग सेवा में करना, वही आपका हेतु होना चाहिए।

हर एक काम का हेतु होता है कि किस हेतु से वह काम किया जा रहा है! उसमें यदि उच्च हेतु तय किया जाए यानी क्या, कि जैसे अस्पताल खोलना है, वहाँ पेशेन्ट्स किस प्रकार स्वस्थ हों, किस प्रकार सुखी हों, कैसे वे लोग आनंदित हों, कैसे उनकी जीवनशक्ति बढ़े, ऐसा आपने उच्च हेतु तय किया हो और सेवाभाव से ही वह काम किया जाए तब उसका बाइ प्रोडक्शन क्या? लक्ष्मी! अत: लक्ष्मी तो बाइ प्रोडक्ट है, उसे प्रोडक्शन मत मानना। सारे जगत् ने लक्ष्मी को ही प्रोडक्शन कहा है। इसलिए फिर उसे बाइ प्रोडक्शन का लाभ नहीं मिलता। अत: आप सिर्फ सेवाभाव ही तय करो तो उसके बाइ प्रोडक्शन में लक्ष्मी तो और भी अधिक आएगी। यानी लक्ष्मी को यदि बाइ प्रोडक्शन ही रहने दे तो अधिक लक्ष्मी आएगी। लेकिन ये तो लक्ष्मी

के हेतु के लिए काम करते हैं, इससे लक्ष्मी नहीं आती। इसलिए आपको यह हेतु बता रहे हैं कि ऐसा हेतु सेट करो। 'निरंतर सेवाभाव।' तो बाइ प्रोडक्ट अपने आप आता रहेगा, जैसे बाइ प्रोडक्शन के लिए कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, खर्चा नहीं करना पड़ता, वह 'फ्री ऑफ कॉस्ट' होता है, वैसे ही यह लक्ष्मी भी 'फ्री ऑफ कॉस्ट' मिले तो वह कितनी अच्छी! इसलिए सेवाभाव का निश्चय करो, मनुष्यमात्र की सेवा। क्योंकि हमने यह अस्पताल खोला है इसलिए आप जो विद्या जानते हो तो उस विद्या का सेवाभाव में उपयोग करना, इतना ही आपका हेतु होना चाहिए। उसके फलस्वरूप अन्य चीज़ें फ्री ऑफ कॉस्ट मिलती रहेंगी। फिर लक्ष्मी की तो कमी कभी नहीं होगी और जो सिर्फ लक्ष्मी के लिए ही करने गए, उन्हें नुकसान हुआ है। हाँ, क्योंकि लक्ष्मी के लिए ही कारखाना लगाया फिर बाइ प्रोडक्ट तो रहा ही नहीं न! क्योंकि लक्ष्मी ही बाइ प्रोडक्ट है, बाइ प्रोडक्शन के लिए हमें प्रोडक्शन तय करना है, तो बाइ प्रोडक्शन फ्री ऑफ कॉस्ट मिलता रहेगा।

सूत्र-21

मैं अपना एक ही तरह का 'प्रोडक्शन' रखता हूँ! 'पूरा जगत् परम शांति प्राप्त करे और कितने ही लोग मोक्ष प्राप्त करें!' क्या मुझे उसका 'बाइ प्रोडक्शन फ्री ऑफ कॉस्ट' नहीं मिलता? मिलता ही रहता है न!

आत्मा प्राप्त करने के लिए जो कुछ भी किया जाता है, वह प्रोडक्शन है और उसके कारण बाइ प्रोडक्शन प्राप्त होता है, जिससे संसार की सारी ज़रूरतें पूरी होती हैं। मैं अपना एक ही तरह का प्रोडक्शन रखता हूँ, 'पूरा जगत् परम शांति प्राप्त करे और कितने ही लोग मोक्ष प्राप्त करें!' मेरा यह प्रोडक्शन है और उसका बाइ प्रोडक्शन मुझे मिलता ही रहता है! हमें चाय-नाश्ता आपसे कुछ अलग तरह का मिलता है, उसका क्या कारण है? आपकी तुलना में मेरा प्रोडक्शन उच्च कोटि का है। उसी प्रकार यदि, आपका प्रोडक्शन उच्च कोटि का होगा तो बाइ प्रोडक्शन भी उच्च कोटि का आएगा!

अन्य सारा प्रोडक्शन, बाइ प्रोडक्ट है, जिसमें आपकी ज़रूरत की सारी चीज़ें मिलती रहेंगी। और वे ईज़िली मिलती रहेंगी। देखो न! यह प्रोडक्शन पैसों के लिए किया है इसलिए आज पैसे ईज़िली नहीं मिलते, दौड़-भाग करते हैं, हड़बड़ाहट में घूमते रहते हैं और चेहरे पर अरंडी का तेल लगाकर घूम रहे हों ऐसे दिखाई देते हैं! घर में अच्छा खाना-पीना है, कितनी सुविधाएँ हैं, रास्ते कितने बढ़िया हैं। रास्ते पर चलें तो पाँव में धूल न लगे! इसलिए मनुष्यों की सेवा करो। मनुष्य में भगवान रहे हुए हैं, भगवान भीतर ही बैठे हैं। बाहर ढूँढने जाओगे तो वे मिलें, ऐसे नहीं हैं। आप मनुष्यों के डॉक्टर हो, इसलिए आपको मनुष्यों की सेवा करने के लिए कहता हूँ। जानवरों के डॉक्टर हों तो उन्हें जानवरों की सेवा करने के लिए कहूँगा। जानवरों में भी भगवान बैठे हैं लेकिन इन मनुष्यों में भगवान विशेष रूप से प्रकट हुए हैं!

जब तक गलत व्यापार शुरू नहीं होता तब तक लक्ष्मी जी जाती नहीं है। गलत रास्ता, वह तो लक्ष्मी के जाने का निमित्त है।

यह काल कैसा है? अभी तो इस काल के लोगों को, कहाँ से सामान ले आऊँ, किस तरह दूसरों का हड़प लूँ, किस तरह मिलावटी सामान बेचना, *अणहक्क* (अवैध) के विषयों को भोगने से फुरसत मिले तो दूसरा कुछ खोज सकेंगे

न? इससे सुख कहीं बढ़ नहीं गए। सुख तो कब कहलाता है? जब मेन प्रोडक्शन करे तब। यह संसार तो बाइ प्रोडक्ट है, पिछले जन्म में कुछ किया होगा, जिससे यह देह मिली है। भौतिक चीज़ें मिली हैं, पत्नी मिली, बंगला मिला। यदि मेहनत से मिलता तब तो मज़दूरों को भी मिलता, लेकिन ऐसा नहीं है। आज के लोगों की समझ बदल गई हैं इसलिए ये बाइ प्रोडक्शन के कारखाने खोल लिए हैं। बाइ प्रोडक्शन का कारखाना नहीं खोलना चाहिए। मेन प्रोडक्शन यानी मोक्ष का साधन, 'ज्ञानी पुरुष' से प्राप्त कर लेना चाहिए। फिर संसार का बाइ प्रोडक्शन तो अपने आप मुफ्त में आएगा ही। बाइ प्रोडक्शन के लिए तो दुर्ध्यान करके अनंत अवतार बिगाड़ लिए! एक बार मोक्ष प्राप्त कर ले, तो तूफान खत्म होगा!

सूत्र-22

लोग दो हेतु के लिए जीते हैं: आत्मार्थ के लिए जीएँ, वैसे तो कुछ ही होते हैं। अन्य सभी लक्ष्मी के लिए जीते हैं। दिन भर लक्ष्मी, लक्ष्मी और लक्ष्मी! 'यहाँ' सुख है ही कहाँ? ये तो भ्रामक मान्यताएँ हैं। इसलिए 'हम' खुल्लम खुल्ला कहते हैं कि, ''आप जिस सुख को खोज रहे हो, वह 'इसमें' नहीं मिलेगा।'' सुख आत्मा में है। हमने वह सुख चखा है, अनुभव किया है। इसलिए 'हम' सभी से कहते हैं कि, 'इस ओर आओ, उस ओर सुख नहीं है!'

लक्ष्मी जी के पीछे तो पूरा संसार ही पागल हो चुका है न, फिर भी उसमें कभी भी सुख नहीं मिलता न! घर बंगले ऐसे ही खाली पड़े रहते हैं और दोपहर को वे कारखाने में होते हैं। पंखे घूमते रहते हैं, भोगने का तो... राम, तेरी माया! इसलिए आत्मज्ञान जानो! यों अंधे की तरह कब तक भटकते रहना है?

पैसे हों तब भी दुःख और पैसे न हों तब भी दुःख, प्रधान मंत्री बन जाए तब भी दुःख, गरीब हो तब भी दुःख। भिखारी हो तब भी दुःख, विधवा को दुःख, सुहागन को दुःख, सात पति वाली को भी दुःख। दुःख, दुःख और दुःख! अहमदाबाद के सेठों को भी दुःख! इसका क्या कारण होगा?

प्रश्नकर्ता : उन्हें संतोष नहीं है।

दादाश्री : उसमें सुख था ही कब? इसमें सुख था ही नहीं। वह तो भ्रांति से लगता है। जैसे शराब पीया हुआ व्यक्ति हो, उसका एक हाथ गटर में पड़ा हो तो कहता है, 'हाँ, अंदर ठंडक लग रही है। बहुत अच्छा है।' वैसा शराब के कारण लगता है। बाकी, उसमें सुख होता ही कहाँ है? वह सब तो सिर्फ जूठन ही है!

इस संसार में सुख है ही नहीं। सुख हो ही नहीं सकता। यदि सुख होता तब तो मुंबई ऐसा नहीं होता। सुख है ही नहीं। वह तो भ्रांति का सुख है और वह सिर्फ टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट है।

लोकसंज्ञा से सुख नहीं है, 'ज्ञानी' की संज्ञा से सुख है। लोगों द्वारा माना गया सुख, सुख नहीं है। पैसों के पीछे ही पड़े हैं कि कहाँ से पैसे लाएँ? कहाँ से पैसे लाएँ? अरे! स्मशान में क्यों पैसे खोज रहे हो? यह संसार तो स्मशान जैसा हो गया है। प्रेम जैसा कुछ दिखाई ही नहीं देता। जिस तरह से पैसे आने वाले हैं, वह कुदरती रास्ता है। 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' है। हमें उसके पीछे पड़ने की ज़रूरत क्या है? वही हमें मुक्त करे तो बहुत अच्छा है न भाई! यह संसार दुःख का समुद्र है। यही समझ में नहीं आता कि इसमें लोगों को सुख कैसे मिला। लोग इसमें

ऐसा सुख मानते हैं जैसे कोई शराबी गटर में हाथ डालकर कहे कि, 'मुझे बहुत ठंडक महसूस हो रही है, बहुत ठंडक महसूस हो रही है।'

सूत्र-23

इन लोगों के लिए भगवान की खोज करने की कोई कीमत ही नहीं है। इसमें, गहराई में उतरे ही नहीं हैं। वे पैसा कमाने में ही गहराई में उतरे हैं। ज्योग्राफी (नक्शा) देखते हैं, किस बंदरगाह पर उतरेंगे? फिर 'केन्टीन' मिलेगी या नहीं, ऐसा सब पता लगाते हैं। लेकिन भगवान तो सस्ता है! उसकी 'नो वैल्यू?' उस को नहीं खोजना है? सुख उसे कहा जाता है जिसके आने के बाद दुःख न आए। दूसरा, दुनिया में लोग जिसे सुख मानते हैं, वह तो लौकिक सुख है, यथार्थ सुख नहीं है।

इस लौकिक सुख के बजाय अलौकिक सुख होना चाहिए कि जिस सुख में हमें तृप्ति मिले। ये लौकिक सुख तो *अजंपा* (बेचैनी,अशांति) बढ़ाते हैं बल्कि। जिस दिन पचास हज़ार रुपये की कमाई हो जाए न, तो गिन-गिनकर ही दिमाग़ सारा खाली हो जाएगा। दिमाग़ तो इतना अधीरता वाला हो जाएगा कि खाना-पीना अच्छा नहीं लगेगा। क्योंकि मेरे पास भी पैसा आता था, वह सब मैंने देखा है कि दिमाग़ कैसा हो जाता था तब! इनमें से कुछ भी मेरे अनुभव से बाहर का नहीं है न? मैं तो इस समुद्र में से तैरकर बाहर निकला हूँ, इसलिए मैं सब जानता हूँ कि आपको क्या होता होगा? अधिक रुपये आएँ, तब अधिक अकुलाहट होती है, दिमाग़ डल हो जाता है और कुछ याद नहीं रहता, *अजंपा* ही *अजंपा* रहा करता है। ये तो नोट गिनते ही रहते हैं, लेकिन वे सभी नोट यहीं के यहीं रह गए और गिनने वाले चले गए! नोट कहते हैं कि, 'तुझे समझना हो तो समझ लेना, 'हम रहेंगे और तू जाएगा!' इसलिए हमें ज़रा सावधान हो जाना चाहिए न! और कुछ नहीं, हमें उनके साथ कोई बैर नहीं बाँधना है। पैसे से हम कहें, 'आओ भाई।' उसकी ज़रूरत है! सभी की ज़रूरत तो है न? लेकिन उसके पीछे ही तन्मयाकार रहे! तो गिनने वाले गए और पैसे रह गए, फिर भी गिनना पड़ता है। वह भी चारा ही नहीं न! शायद ही कोई सेठ ऐसा होगा कि मुनीम जी से कहे कि, 'भाई, मुझे खाते समय परेशान मत करना, आप आराम से पैसे गिनकर तिजोरी में रखना और तिजोरी में से ले लेना।' उसमें दखल नहीं करे, ऐसा सेठ तो शायद ही कोई होगा। हिन्दुस्तान में ऐसे दो-पाँच सेठ होंगे जो निर्लेप रहें! वे मेरे जैसे!! मैं कभी भी पैसे नहीं गिनता!! यह क्या झंझट! इन लक्ष्मी जी को आज मैंने बीस-बीस सालों से हाथ में नहीं पकड़ा, तभी इतना आनंद रहता है न!

जब तक व्यवहार है तब तक लक्ष्मी जी की भी ज़रूरत है, उसकी मनाही नहीं है, लेकिन उसमें तन्मयाकार नहीं होना चाहिए। तन्मयाकार तो नारायण में होना। सिर्फ लक्ष्मी जी के पीछे पड़ेंगे तो नारायण चिढ़ जाएँगे। लक्ष्मीनारायण का तो मंदिर है न! लक्ष्मी जी क्या कोई ऐसी-वैसी चीज़ है? आपको कुछ पसंद आई यह बात?

यदि आपको सुख पसंद है तो जिसमें सुख है उसकी भजना करो। सुख भगवान में है। भगवान तो अनंत सुख के धाम हैं और जड़ की भजना करोगे तो दुःख होगा। क्योंकि जड़ में दुःख ही है।

'क्या करने से खुद सुखी होगा?' यदि इतना ही आ गया न, तो पूरा ही 'साइन्स' आ गया उसे!

- जय सच्चिदानंद

आपको दुःख है ही कहाँ?

इस संसार में आपको दुःख है ही कहाँ? दुःख तो अस्पताल में है, जहाँ पैर ऊँचा बाँधा हुआ है! भयंकर जले हुए लोग हैं, उन्हें दुःख है। आप पर दुःख ही क्या पड़ा है? यों ही शोर मचाते रहते हो, बिना बात के! इन्हें तो छह-छह महीनों की जेल में डाल देना चाहिए! आप अच्छी चीज़ को खराब कहते हो, तो खराब को क्या कहोगे? अस्पताल में जहाँ दुःख है, उसे दुःख कहो और दुःख नहीं हो उसे दुःख कैसे कहा जाए? हम हमारी ज़िंदगी में कभी भी, 'दुःख है', ऐसा नहीं बोले हैं। ऐसा तो बोलते होंगे? आप क्या मूर्ख आदमी हैं? दो आने, चार आने, आठ आने, बारह आने, सभी एक जैसा?

दुःख तो अस्पतालवालों को है। इन बंगलों में, पलंग में सोए हुए हैं, उन्हें नहीं है। पैर ऊपर बांधे हुए हों, जले हुए हों, उन्हें आप देखकर आओ तो खुद को दुःख नहीं है, ऐसा आभास होगा। कुदरत के लिए आप को आनंद होगा कि 'ओहोहो! कुदरत ने कितनी अच्छी प्लेस (स्थान) मुझे दी है! यह तो लोगों को भान ही नहीं है न? इन्होंने तो अच्छे की भी बुराई की और कमज़ोर की भी बुराई की! बुराईयाँ करना, सिर्फ यही काम है। इसे मानवता कैसे कहेंगे? किसे तकलीफ कहना, उसकी लिमिट होनी चाहिए या नहीं? 'आज मुझे भूख नहीं लगी, आज मुझे यह तकलीफ है', यह तो कैसी 'मेडनेस'?

मेरे पैर में फ्रेक्चर हो गया था, तब कुछ लोग पैर में लटकाया हुआ वज़न देखकर कहते थे, 'आपको भगवान ने ऐसा दुःख किसलिए दिया होगा? अब, भगवान तो हैं ही नहीं!'

अरे भाई, मुझे कहाँ दुःख दिया है? वह तो आपको ऐसा लगता है। इसे दुःख नहीं कहते, दुःख तो यहाँ पर छेद करके खाना पड़े, यहाँ पर छेद करके पेशाब करना पड़े, उसे दुःख कहते हैं। ये छोटे बच्चे हैं, उन्हें बहुत दुःख होता है बेचारों को। उसे जब दुःख होता है तब रोता ज़रूर है, परंतु बोलता नहीं कि 'मुझे यहाँ दुःख रहा है!' और ये अभागे लोग भोजन करते समय नौ रोटियाँ खा जाते हैं और कहेंगे कि 'मैं दुःखी हूँ!' क्या कहें इन लोगों को? दुःख की परिभाषा होनी चाहिए या नहीं होनी चाहिए? और सुख की परिभाषा होनी चाहिए कि 'सुख किसे कहते हैं?'

संसार में सुख अपार है परंतु लोग भोग नहीं पाते! कैसे सुख हैं! खीर भी साथ में मिलती है और मालपूआ भी मिलता है, वह भी फिर असली घी के! घारी (एक प्रकार की मिठाई) मिलती है, दाल, चावल, सब्ज़ी मिलें, फिर भी ये दुःखी! इन मनुष्यों के सिवा दूसरे सभी जानवरों को पूछकर आओ कि, 'दुःख है?' इसी तरह मनुष्यों में भी हल्की क़ौम में पूछकर आओ?

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप तो कहते हैं कि घारी खानी है और फिर उसमें तन्मय नहीं होना है।

दादाश्री : वह आपकी लाइन की बात है। आपको जैसा राज करना आए, वैसा राज करो! कैसे सुख सामने आकर खड़े हैं, तब दुःख का गाना गाते रहते हैं!

इस जगत् में कभी भी रोने-धोने जैसा है ही नहीं। सिर्फ बीस-इक्कीस वर्ष की जवान लड़की

हो और उसका कोई बच्चा वगैरह नहीं हो और वह विधवा हो गई हो, तो उसके लिए रोने-धोने जैसा है। रोना-धोना, यानी क्लेश करने जैसी तो कोई वस्तु है ही नहीं जगत् में! फिर भी पूरा दिन क्लेश, क्लेश और क्लेश! अरे, क्या पढ़े? आपने कैसी पढ़ाई की है? इसे पढ़ना-लिखना कहेंगे ही नहीं न? 'थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी' समझनी चाहिए न?

सासों से पूछें तब कहेंगी, 'मेरी बहू खराब है।' उसी प्रकार, सभी बहुओं से पूछें तब कहेंगी कि, 'मेरी सास खराब है!' अरे, ऐसा कैसे हो सकता है? सभी बहुएँ, सभी सासें खराब हैं?

ये जानवर भी कुछ हद तक के दु:खों को रिस्पॉन्स नहीं देते और मनुष्य रिस्पोन्स दे देते हैं, इतनी अधिक फूलिशनेस है!

इन लोगों का दृष्टिबिंदु १०० प्रतिशत गलत है।

प्रश्नकर्ता : सभी १०० प्रतिशत गलत हैं, ऐसा कैसे कह सकते हैं?

दादाश्री : खुली आँखों से अंधे हैं। खुली आँखों से अंधे यानी खुद के हिताहित का भान नहीं है। मैं क्या बोलूँ तो हित, क्या करूँ तो हित, और मैं क्या जानूँ तो हित, वह मालूम ही नहीं है। हर किसी चीज़ में नकल करने में शूरवीर हो गए हैं! सबकुछ बदल गया है। अपने हिन्दुस्तान के लोग तो किसी की नकल करते ही नहीं थे। असल में तो हमारी नकल पूरे जगत् ने की है। यह मॉडर्न जमाना आया है, उससे मुझे दिक्कत नहीं है। मैं समझता हूँ कि यह युग है, तो यह युग इस तरह से चलता ही रहेगा। मैं युग से दूर नहीं रहता, परंतु यह हित किया या अहित किया, वह मैं समझता हूँ। इन लोगों ने संपूर्ण अहित किया है।

मुझे दु:ख है ऐसा कहते हो? दु:ख तो था 'रिलेटिव' में, वह 'रियल' में नहीं था। वह आरोपित था। जहाँ पर आप नहीं हो, वहाँ पर दु:ख माना गया है, 'रोंग बिलीफ़' से! २५ प्रतिशत था, उसे आपने कहा कि 'मुझे यह दु:ख पड़ा है' ऐसा बोले, कि वह १०० प्रतिशत हो गया!

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में ओनलाइन सत्संग कार्यक्रम

9 मई - **पूज्यश्री के जन्मदिन पर विशेष कार्यक्रम**

14 से 16 मई - **जर्मन महात्माओं के साथ सत्संग शिविर (अंग्रेजी में)**

2 से 6 जून - **हिन्दी सत्संग शिविर**

25 से 28 जून - **नोर्थ अमरिका के महात्माओं के साथ सत्संग शिविर**

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई:** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** (079) 27540408, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

पूज्य नीरू माँ/पूज्य दीपक भाई को देखिए टी.वी. चैनल पर

भारत

- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- **'अरिहंत'** चैनल पर रोज सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3, रात 8 से 9
- **'वालम'** पर रोज 6 से 6-30 **(सिर्फ गुजरात राज्य में)**
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज सुबह 7-30 से 8, रात 8-30 से 9-30 **(हिन्दी में)**
- **'साधना'** पर रोज सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 **(हिन्दी में)**
- **'उड़ीसा प्लस'** टी.वी. पर रोज सुबह 7-30 से 8 **(हिन्दी में-केवल उड़ीसा राज्य में)**
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर रोज सुबह 7 से 7-30 **(मराठी में)**
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर रोज दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 **(कन्नड़ा में)**

USA - Canada

- **'TV Asia'** पर रोज सुबह 7-30 से 8 EST
- **'Rishtey'** पर रोज सुबह 7 से 7-30 और 8 से 8-30 EST **(हिन्दी में)**

U K

- **'बीनस' टी.वी.** पर रोज सुबह 8 से 8-30 GMT **(हिन्दी में)**
- **'बीनस' टी.वी.** पर रोज सुबह 8-30 से 9 GMT
- **'MA TV'** पर रोज शाम 5-30 से 6-30 GMT
- **'Rishtey'** पर रोज सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6 to 6-30 am GMT)

Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 **(हिन्दी में)**

Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- **'Rishtey-Asia'** पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 **(हिन्दी में)**

USA - UK - Africa - Australia

- **'आस्था ग्लोबल'** पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 IST
  (डिश टी.वी. चैनल **UK** -849, **USA**-719) **(गुजराती और हिन्दी में)**

अप्रैल 2021
वर्ष-16 अंक-6
अखंड क्रमांक - 186

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

वास्तविक सुख किसमें?

एक भी जीव ऐसा नहीं होगा कि जो सुख नहीं ढूँढ रहा हो! और वह भी फिर शाश्वत सुख ढूँढता है। वह ऐसा समझता है कि लक्ष्मी जी में सुख है, परंतु उसमें भी भीतर जलन खड़ी होती है। जलन होना और शाश्वत सुख मिलना, वह कभी होगा ही नहीं। दोनों विरोधाभासी हैं। इसमें लक्ष्मी जी का दोष नहीं है, उसका खुद का ही दोष है। लुट जाने का भय है न, 'लुट जाएँगे', उस चीज़ को सुख कह ही नहीं सकते। जगत् की सारी चीज़ें अप्रिय लग सकती हैं जबकि आत्मा तो खुद का स्वरूप है, वहाँ दु:ख है ही नहीं। जगत् में तो पैसे देने वाला भी अप्रिय लगता है। पैसे कहाँ रखें, फिर वह परेशानी हो जाती है!

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.